 मानुषीमिह संस्कृताम्

विदेह
वर्ष-1 मास-1 अंक-2

संपादकीय
(15.01.2008)

एहि दोसर अंककेँ प्रस्तुत करैत हम हर्षित छी। एहि मे 1.मिथिला पेंटिंग, 2.रचना लिखबासँ पहिने छन्द,संस्कृत-मैथिलीक ज्ञान आ' अन्यान्य शिक्षा3.संस्कृत शिक्षाक आ' 4. 'बालानाम् कृते' नामसँ छोट बच्चा संबंधित सामग्री सम्मिलित कएल जा' रहल अछि। जे मेल सभ प्राप्त भेल ताहि मे oldmani@umainc.com,iipkarna@yahoo.com,jyotiprakash.lal@gmail.comआ'bibhutithakur2000 @yahoo.com केर मेल उत्साहवर्द्धक छल आ' एहिमे किछु महत्त्वपूर्ण सुझाव सेहो प्राप्त भेल। ओहि आधार पर उपरोक्त लिखित चारि स्तंभक अतिरिक्त 5.पंजी-प्रबंध 6.संस्कृत आ' मिथिला संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासंगिकता आ' 7.Computers, softwares, interfacing of the old & new (restoring old photographs, songs on disks, tapes, etc) पर सामग्रीक प्रारम्भ कए देल गेल अछि ।अगला अंकसँ संगीत-शिक्षाक आरंभ कएल जायत।पाठक एहि सभसँ संबंधित आ' अन्यान्य रचना सभ ggajendra@yahoo.co.in कैँ अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .txt किंवा .pdf फॉर्मेटमे पठाय सकैत छथि। प्रवासी पद्यक अंतर्गत ज्योति झा चौधरीक कविता सेहो अंतमे देल गेल अछि,आ' आशा करैत छी जे ओ' मैथिलीमे सेहो रचना सभ पठओतीह।पिछला साल तीन महिना मीराम्बिका आऽ मदर इंटरनेशनलक शिक्षक-शिक्षिकाकेँ संस्कृत संभाषणक शिक्षा देबाक हेतु श्री अरविन्द आश्रम,नव देहली मे हमरा बजाओल गेल
छल।ओहि क्रममे जे नोट बनेलहुँ तकरे संस्कृत शिक्षाक अंतर्गत हम दय रहल छी।

एहि अंक मे अछि

1. शोध लेख.
2.मैथिली रामचरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता (पृ. 4 सँ 11)
2. उपन्यास
1.सहस्रबाढ़नि(आगाँ) (पृ. 12 सँ 13)
3.महाकाव्य 1.महाभारत(आगाँ) (पृ.14 सँ19)
4.कथा 2.गंगा-ब्रिज (पृ. 20 सँ 25)
5.पद्य 45 सँ आगाँ (पृ.26 सँ39)
6.संस्कृत शिक्षा (पृ.40सँ47)
7.मिथिला कला-चित्रकला (पृ.48 सँ 49)
8.बालानांकृते-डाकूरौहिणेय (पृ.50 सँ 53)
9.पंजी-प्रबंध (पृ. 54सँ 55)
10.मिथिला आऽ संस्कृत- दरिभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासंगिकता (पृ.56सँ58)
11.भाषा आऽ प्रौद्योगिकी (कंप्युटर,छायांकन,कीबोर्ड/टंकणक तकनीक) (पृ. 59सँ59)
12.रचना लिखबासँ पहिने... (पृ. 60सँ61)
13.आऽ अंतमे प्रवासी मैथिलक हेतु अंग्रेजीमे

VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT(आगाँ) (पृ.62सँ78)

14.प्रवासी अंग्रेजी पद्य(ज्योति झा चौधरीक) (पृ.79सँ80)

प्रचारक उद्देश्यसँ ढ़ेर रास ई-मेल पठाओल गेल आ' कतेको प्लेटफॉर्मसँ ब्लॉगक प्रयोग कएल गेल। किछु पाठककेँ बेर-बेर ई-मेल गेल होयतन्हि से संभव, आ' ताहिसँ भेल असुविधाक हेतु हम क्षमाप्रार्थी छी।

अपनेक प्रतिक्रिया आ' रचनाक प्रतीक्षा अछि।

नई दिल्ली <u>*u]hन्दर 7fকু/*</u>
15.01.2008

2.शोध लेख

मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता

मैथिली साहित्यकेँ पढ़निहारक समक्ष मैथिलीमे रामचरित किंवा रामायण 1. श्री चंदा झा कृत मिथिला भाषा रामायण आऽ 2.श्री लालदासक रमेश्वर चरित मिथिला रामायण -एहि दू गोट ग्रंथक रूपमे प्राप्त होइत छन्हि।पाठ्यक्रमक अंतर्गत स्कूल,कॉलेज-विश्वविद्यालयक मैथिली विषयक पाठ हो किंवा सामान्य आलोचनग्रंथ आकि पत्र-पत्रिकामे छिड़ियायल

लेख सभ एहि दू गोट रामायणक अतिरिक्त कोनो तेसर रामायणक अस्तित्वो धरि नहि स्वीकार कएल गेल अछि। एकर संग ईहो बुझि लियह जे जनमानस समालोचनाशास्त्रक आधार पर राखल विचारकैं तखने स्वीकार करैत अछि जखन की ओऽ सत्यताक प्रतीक हो। आइयो मिथिलामे अखंड रामायण पाठ होइत अछि-बाल्मीकि रामायणक किंवा तुलसीक रामचरितमानसक। एकर कारण पर हम बहुत दिन धरि विचार करैत रहलहुँ।कैकटा चन्द्र रामायण आऽ लालदासकृत मिथिला रामायण रामायण अखंड पाठ केनिहार लोकनिकैं बँटबो कएलहुँ, मुदा सबहक ईएह विचार छल, जे ई दुनू ग्रंथ मैथिली साहित्यक अमूल्य धरोहर अछि, मुदा अखंड पाठक सुर जे तुलसीक मानसमे अछि से दोसर भाषाक रहला उत्तरो संगीतमय अछि। शंकरदेव अपन मातृभाषा असमियाक बदला मैथिली भाषाक प्रयोग संगीतमय भाषा होयबाक द्वारे कएलन्हि ताहि भाषामे संगीतमय रामायणक रचना जे अखण्ड पाठमे प्रयोग भय सकय, केर निर्माण संभव नहि भय सकल अछि से हमर मोन मानबाक हेतु तैयार नहि छल। तखने एकटा लाइब्ररीमे हमरा श्री रामलोचनशरण-कृत यथासम्भव पूर्णभावरक्षित समश्लोकी मैथिली श्रीरामचरितमानसक दर्शन भेल । एहि ग्रंथकैं पूर्णरूपैं पढ़बाक मोह हम नहि त्यागि सकलहुँ आऽ

आब एहि पर एक गोट छोट-छीन समीक्षा लिखबाक पहिने हम समस्त मैथिल समाजसँ दुइ गोट प्रश्न पुछय चाहैत छी।
1.अपन समीक्षक लोकनि एहि मोतीकैं चिन्हबामे सफल किएक नहि भय सकलाह,एकर चर्चो तक मैथिलीक उपरोक्त दुनू रामायणक समक्ष किएक नहि केल गेल। आचार्य रामलोचन शरण मैथिलीक सभसँ पैघ महाकाव्यक रचयिता छथि आऽ हमरा विचारे सभसँ संपूर्ण मैथिली रामायणक सेहो। जखन हम एहि महाकाव्यक फोटोकॉपी लाइब्ररियनक विशेष अनुकंपासँ लेबामे सफल भेलहुँ आऽ एकर पूर्वाँचल मिथिलाक रामायण- अखंड- पाठक संस्थाकैं देलहुँ, तँ ओ ऽ लोकनि एकरा देखि कय आश्चर्यचकित रहि गेलाह आऽ अगिला साल एहि रामायणक अखंड पाठक निर्णय कएलन्हि। एकरा मैथिलीक समालोचनाशास्त्रक विफलता मानल जाय, किएक तँ ई महाकाव्य तँ विफल भैये नहि सकैत अछि। आचार्यक मनोहरपोथीक चर्चा हम अपन बाल्येवस्थासँ सुनैत रही।
2. मैथिलीक सभसँ पैघ महाकाव्यक चर्चा मात्र सीतायन पर आबि किएक खतम भय जाइत अछि।आचार्य श्री रामलोचनशरणक मैथिली श्री रामचरितमानस सभसँ पैघ महाकाव्य अछि ई एकटा तथ्य अछि आऽ से समालोचनाकार किंवा मैथिली भाषाक इतिहासकार लोकनिक कृपाक वशीभूत नहि अछि।

अपन ग्रंथक किञ्चित् पूर्ववृत्तम् मे आचार्य लिखैत छथि- मिथिलाभाषायाः मूर्द्धन्या लेखकाः श्रीहरिमोहनझामहोदया निशम्यैतद् वृत्तं परमाह्लादं गता भूयो भूयश्च मामुत्साहितवन्तः। आगाँ **ओऽ लिखैत छथि-प्राध्यापकस्य श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' तथा सम्पादनविभागस्थ पण्डित श्री शिवशंकरझा-महोदयस्य हृदयेनाहं कृतज्ञोऽस्मि।**

आचार्यजीक सुन्दरकाण्डक पारंभ देखू-

जामवंत केर वचन सोहाओल।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाओल॥1॥
ता धारि बाट देखब सहि सूले।
खा कय बंधु कंद फल मूले॥2॥
जाधरि आबी सीतहिँ देखी।
होयत काज मन हरख विसेखी॥3॥
ई कहि सबहिँ झुकाकय माथे।
चलल हरषि हिय धय रघुनाथे॥4॥
सिंधु तीर एक सुंदर भूधर।
कौतुक कूदि चढ़ल तेहि ऊपर॥5॥
पुनु पुनि रघुवीरहिँ उर धारी।
फनला पवनतनय बल भारी॥6॥

जहि गिरि चरन देथि हनुमंते।
से चल जाय पताल तुरंते॥7॥
सर अमोघ रघुपति केर जहिना।
चलला हनूमान झट तहिना॥8॥
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी।
कह मैनाक हौ श्रम भारी॥9॥

आऽ आब देखू श्री रामचरित मानसक बानगी।

You are the Spirit indwelling the hearts of all. Grant me intense devotion to Your feet, O crest-jewel of Raghus, and free my mind from faults like concupiscence etc. (2)

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥ ३॥

atulitabaladhāmaṁ hemaśailābhadehaṁ
danujavanakṛśānuṁ jñānināmagragaṇyam,
sakalaguṇanidhānaṁ vānarāṇāmadhīśaṁ
raghupatipriyabhaktaṁ vātajātaṁ namāmi.3.

I bow to the son of the wind-god, the beloved devotee of Śrī Rāma (the Lord of the Raghus), the chief of the monkeys, the repository of all virtues, the foremost among the wise, a fire to consume the forest of the demon race, possessing a body shining as a mountain of gold and a home of immeasurable strength. (3)

चौ०— जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए॥
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई॥ १॥
जब लगि आवौं सीतहि देखी। होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी॥
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा। चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा॥ २॥
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर। कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर॥
बार बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी॥ ३॥
जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता। चलेउ सो गा पाताल तुरंता॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एही भाँति चलेउ हनुमाना॥ ४॥
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी॥ ५॥

Cau.: jāmavaṁta ke bacana suhāe, suni hanumaṁta hṛdaya ati bhāe.
taba lagi mohi parikhehu tumha bhāī, sahi dukha kaṁda mūla phala khāī.1.
jaba lagi āvaū sītahi dekhī, hoihi kāju mohi haraṣa biseṣī.
yaha kahi nāi sabanhi kahū māthā, caleu haraṣi hiyå dhari raghunāthā.2.
siṁdhu tīra eka bhūdhara suṁdara, kautuka kūdi caṛheu tā ūpara.
bāra bāra raghubīra sābhārī, tarakeu pavanatanaya bala bhārī.3.
jehi giri carana dei hanumaṁtā, caleu so gā pātāla turaṁtā.
jimi amogha raghupati kara bānā, ehī bhāti caleu hanumānā.4.
jalanidhi raghupati dūta bicārī, taiṁ maināka hohi śramahārī.5.

Hanumān was much delighted at heart to hear the heartening speech of Jāmbavān. He said, "Suffering hardships and living on bulbs, roots and fruits, wait for me, brethren, till I return after seeing Sītā. I am sure our object will be accomplished as I feel very cheerful." So saying and after bowing his head to them all he set out full of joy with an image of Śrī Rāma (the Lord of the Raghus) enshrined in his heart. There was a beautiful hill on the sea-coast; he lightly sprang on to its top. And invoking the Hero of Raghus line again and again, the son of the wind-god took a leap with all his might. The hill on which Hanumān planted his

तुलसी अकबरक समकालीन छलाह् आऽ हुनकर भाषा आऽ अखुनका भाषामे किछु अंतर आबि गेल अछि, मुदा तुलसीक गेयता ओहिनाक ओहिना अछि।
आचार्यजी तुलसीक गेयता उठओलन्हि अछि, आऽ दुरूहता खतम कय देने अछि। सभ काण्डक शुरूमे देल संस्कृत पद्य तुलसीक मानससँ लेलन्हि अछि। कवि चन्द्र आऽ लालदास दुनू गोटे अप्पन संस्कृत पद्य बनओलन्हि अछि।
आचार्यजीक ई मैथिली रमचरितमानस तुलसीक मानसक रूपांतर तँ अछि,मुदा ई मैथिलीक मूल महाकाव्यक रूपमे परिगणित होयबाक अधिकारी अछि जेना कंबनक तमिल रामायण आऽ तुलसीक मानस अपन-अपन भाषामे केल जा रहल अछि। कंबन बाल्मीकी रामायणक रूपांतर तमिलमे कय रहल छलाह् आऽ बाल्मीकि रामायणक विषयमे कहलन्हि जे- ई रामायण एकटा दूधक समुद्र छे आऽ हम छी एकटा बिलाड़ि जे मोनसूबा बना रहल अछि जे एहि सभटा दूधकँ पीबि जाइ। ओना इइहो सत्य जे कंबन कहियो -आचार्यजी सेहो एहिना कएलन्हि- रामायण कँ अपन मौलिक कृति नहि कहलन्हि वरन बाल्मीकिक कृतिक रूपांतरे कहलन्हि,जखन कि ओ ऽ अपन कृतिमे रामकँ भगवान बनाय देलन्हि।बाल्मीकि रामकँ मर्यादा पुरुष अहि मानैत छलाह।बाल्मीकि सुग्रीवक विवाह बालीक पत्नीसँ बालीक मरबाक पश्चात होयबाक वर्णन करैत छथि मुदा कंबन बालीक पत्नीक आजीवन वैधव्यक वर्णन करैत छथि। आच्छर्यजीकँ ई करबाक आवश्यकता नहि पड़लन्हि किएकतँ तुलसीक मानस लोकक कंठमे बसि गेल छल,आऽ ओऽ एकर निर्वाह कएलन्हि।
आब मानसक एकटा विवादास्पद पद्यक चर्चा करी। अर्थक अनर्थ कोना होइत अछि से देखू। आचार्यजी सुन्दरकाण्डक अंतमे लिखैत छथि जखन सिंधु (समुद्र)रामकँ लंका जयबाक रस्ता नहि दैत छथि तखन राम कहैत छथि,
लछुमन बान सरासन आनू।
सोखब बारिधि बिसिख कृसानू॥1॥

तखन सिंधु कर जोरि बजैत छथि-
ढोल गमार सुद्र पसु नारी।
सब थिक ताड़न केर अधिकारी॥

एकर अर्थ ई सभ -ढोल गमार सुद्र पसु नारी- ई सभ शिक्षाकिंवा सबक देबा योग्य अछि,गमार सुद्र आऽ नारीमे शिक्षाक अभाव अछि तँ आ ऽ पसुमे मनुष्यक अपेक्षा बुद्धि नहि छैक तँ, ढोलक प्रयोग बिना शिक्षाक करब तँ संगीत नहि ध्वनि भय जायत। नीचाँ तुलसीक श्रीरामचरित मानसमे सेहो देखू-

Do.: **kāṭehi̐ pai kadarī pharai koṭi jatana kou sī̐ca,**
binaya na māna khagesa sunu ḍāṭehi̐ pai nava nīca.58.

Though one may take infinite pains in watering a plantain it will not bear fruit unless it is hewed. Similarly, mark me, O king of birds, (continues Kākabhuśuṇḍi,) a vile fellow heeds no prayer but yields only when reprimanded. (58)

चौ०— **सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे॥**
गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी॥ १॥
तव प्रेरित मायाँ उपजाए। सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए॥
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई। सो तेहि भाँति रहें सुख लहई॥ २॥
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही। मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही॥
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी॥ ३॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई। उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई॥
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई। करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई॥ ४॥

Cau.: **sabhaya siṁdhu gahi pada prabhu kere, chamahu nātha saba avaguna mere.**
gagana samīra anala jala dharanī, inha kai nātha sahaja jaRa karanī.1.
tava prerita māyā̐ upajāe, sṛṣṭi hetu saba graṁthani gāe.
prabhu āyasu jehi kahā̐ jasa ahaī, so tehi bhā̐ti rahē̐ sukha lahaī.2.
prabhu bhala kīnha mohi sikha dīnhī, marajādā puni tumharī kīnhī.
ḍhola gavā̐ra sūdra pasu nārī, sakala tāRanā ke adhikārī.3.
prabhu pratāpa mai̐ jāba sukhāī, utarihi kaṭaku na mori baRāī.
prabhu agyā apela śruti gāī, karaũ so begi jo tumhahi sohāī.4.

The god presiding over the ocean clasped the Lord's feet in dismay. "Forgive, my lord, all my faults. Ether, air, fire, water and earth— all these, my lord, are dull by nature. It is Māyā (Cosmic Nature) which brought them forth for the purpose of creation under an impulse from You; so declare all the scriptures. One would attain happiness in life only by remaining where he has been placed by the Lord. My Lord has done well in giving me a lesson; but You have fixed certain limits for everyone. A drum, a rustic, a Śūdra, a beast and a woman—all these deserve instructions. By the Lord's glory I shall be dried up and the army will cross over; but this will bring no credit to me. Your command, however is inviolable; thus declare the Vedas, I shall do at once what pleases You." (1—4)

दो०— **सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ।**
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ॥ ५९॥

Do.: **sunata binīta bacana ati kaha kṛpāla musukāi,**
jehi bidhi utarai kapi kaṭaku tāta so kahahu upāi.59.

On hearing his most submissive words the all-merciful smiled and said, "Tell me, dear father, some device whereby the monkey host may cross over." (59)

चौ०— **नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाईं रिषि आसिष पाई॥**
तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे॥ १॥

फेर समुद्र ओहि स्थितिमे खलनायक बनि रहल छल आ ऽ ओकर वक्तव्य कविक आकि रचनाकारक वक्तव्य नहि भय सकैत अछि। रचनाकारक रचनामे नीक अधलाह सभ पात्र रहैत अछि, आ ऽ ओहि पात्रक मुँह सँ नीक आ ऽ अधलाह दुनू गप निकलत। रचनाकारक सफलता एहि पर निर्भर करैत अछि, जे ओ ऽ अपनाकेँ अपन पत्रसँ फराक कय पबैत अछि कि नहि।

एहि आलोचना निबंधक उद्देश्य चन्द्र कवि आकि कवि लालदासक रचनाकेँ छोट करब नहि अछि वरन् हुनकर रचनाक समकक्ष आचार्यक रचनाकेँ अनबा मात्र अछि जाहिसँ तुलसीक मानसक वर्चस्व आचार्यजीक रचना खतम कय सकय। तुलसीक प्रासंगिकता नहि वरण ओकर दुरूहताकेँ आचार्य खतम कएने छथि।

(अनुवर्तते)

2. उपन्यास

1.सहस्रबाढ़नि(आगाँ)

हमरा दू गोट घटना आर यादि आबि रहल अछि। पहिल घटना एक गोट बच्चाक गामसँ आयब। ओ' हमरा हेतु किछु दिन पढ़ाईमे चुनौतीक रूपमे आयल कारण ओकर गाम बला किताबमे किछु नवीन जानकारी रहैक, मुदा तकर कोटा पूरा भेलाक बाद हम ओकर चुनौतीकेँ खतम कय देलहुँ।

दोसर घटना छल एक गोट बच्चाक एक्सीडेंट, जकर बाद हम सभ खेलाइ कालमे टाइम निकालि ओकरा खिड़कीसँ देखि अबैत रहियैक। कहियो काल ओकर रूम मे जा कय ओकर डायरी सेहो देखि अबैत रही।ओकर किछु अंश हमरा यादि अछि,से एना अछि।

"अप्पनसभक गप्प करबा लेल हमरा लगमे समयक अभाब रहय लागल।किछु त एकर कारण रहल हम्मर अप्पन आदति आ किछु एकर कारण रहल हम्मर एक्सीडेंट, जकर कारणवस हम्मर जीवनक डेढ साल बुझा पडल जेना डेढ दिन जेकाँ बीति गेल।किछु एहि बातक दिस सेहो हमारा ध्यान गेल जे डेढ सालमे जतेक समयक नुकसान भेल तकर क्षतिपूर्ति कोनाकय होयत। किछु त भोरमे उठि कय समय बचेबाक विचार आयल मुदा आँखिक निन्द ताहि मे बाधक बनि गेल।तखन सामजिक संबंधकेँ सीमित करबाक विचार आयल। एहिमे बिना हमर प्रयासक सफलता भेटि गेल छल। कारण एकर छल हमर न हि खतम प्रतीत होमयबला बीमारी। एहिमे विभिन्न डॉक्टरक ओपिनियन,किछु गलत ऑपरेशन आ एकर सम्मिलित इम्प्रेसन ई जे आब हमरा अपाहिजक जीवन जीबय पडत। आनक बात त छोड़ू हमरा अपनो मोनमे ई बात आबय लागल छल। लगैत छल जे डॉक्टर सभ फूसियाहिँक आश्वासन दय रहल छल। एहि क्रममे फोन सँ ल कय हाल समाचार पूछनहारक संख्या सेहो घटि गेल छल। से जखन अचानके बैशाखी फेर छडी पर अयलाक बाद हम कार चलाबय लगलहूँ तँ बहूत गोटेकँ फेर सँ सामान्य संबंध सुधारयमे असुविधा होमय लगलन्हि। जे हमरा सँ दूर नहि गेल रहथि तनिकासँ त   हम जबर्दस्तीयो संबंध रखलहूँ, मुदा दोसर दिशि गेल लोक सँ हमर व्यवहार निरपेक्ष रहि कय पुनःसंबंध बनेबासँ हतोत्साहित करब रहय लागल। दुर्दिनमे जे हमरापर हँसथि तनिकर प्रति ई व्यवहार सहानभूतिप्रदहि मानल जायत। एहिसँ समयधरि खूब बचय लागल।

शुरुमे त' लागल जेना ऑफिसमे क्यो चिन्हत की नहि। मुदा जखन हम ऑफिस पहुँचलहुँ त' लागल जेना हीरो जेकाँ स्वागत भेल हो। मुदा एहिमे ई बात संगी-साथी सभ नुका लेलक जे हमर छडी सँ चलनाई हुनका सभमे हाहाकार मचा रहल छन्हि।
सभ मात्र हमर हिम्मतक प्रशंसा करैत रहैत छलाह। जखन हम छडी छोडि कय चलय लगलहुँ आ जीन्स शर्ट-पैंट पहिरि कय अयलहुँ, तखन एक गोटे कहलक जे आब अहाँ पुरनका रूपमे वापस आबि रहल छी। एहि बातकेँ हम घर पर आबि कय सोचय लगलहुँ।अपन चलबाक फोटोकेँ पत्नीक मदति सँ हैण्डीकैम द्वारा वीयोडीग्राफी करबयलहुँ।एकबेर तँ सन्न रहि गेलहुँ। चलबाक तरीका लँगराकय दौरबा सन लागल।
बादमे घरक लोक कहलक जे ई त' बहुत कम अछि, पहिने त' आर बेसी छल। तखन हमरा बुझबामे आयल जे संगीसभ आ ओ' सभ जे हमरासँ लगाव अनुभव करैत छलाह, तनिका कतेक खराब लगैत होयतन्हि। तकराबाद हमरा हुनकरसभक प्रोत्साहन आ' हमर हिम्मतक प्रशंसा करैत रहबाक रहस्यक पता चलल । अपन प्रारम्भिक जीवनक एकाकीपनक बादमे नौकरी-चाकरी पकड़लाक बाद सार्वजनिक जीवनमे अलग-थलग पड़ि जयबाक संदेह , आशा , अपेक्षा किंवा अहसास-फीलिंगक बाद जे एहि तरहक अनुभव भेल से हमर व्यक्तित्वक भिन्न विकासकेँ आ'र दृढ़ता प्रदान केलक ।"

ओ' तँ छल हमरे संगी मुदा कल्पना कय रहल छल जेना कोनो पैघ वियाहल व्यक्ति होय।

(अनुवर्तते)

3.महाकाव्य

1.महाभारत(आगाँ)

शांतनुक संग सत्यवतीक,विवाह छल भेल जे।
चित्रांगद आऽ विचीत्रवीर्य बाल दुइ आयल से।
बालक दुनू छोटे छल, शांतनुक प्रयाण भेल।
चित्रांगदक भीष्म, तखन राज्याभिषेक कएल।
घमंडी से छल एहन की देव की दानव बुझय,
की गंधर्व की मानव ककरो नहि टेर करय।
आऽदेह छोड़ल, युद्ध संग गंधर्वक कए|

विचित्रवीर्यक राज सेहो चलल बड्ड थोड़ दिन।
क्षयक बीमारी छल अल्पायु मे मृत्युक अदिन।
धृतराष्ट्रक आऽ पांडुक जन्मो नहि भेल छल।
विधिक विधान छल, ज्येष्ठ पुत्र अंध भेल ,
पौण्ड्र ग्रस्त पाण्डुकेँ राज्य-काज देल गेल।

अंबिकाक पुत्र धृतराष्ट्र,अंबालिका पुत्र पाण्डु छल।
अंबिकाक दासीसँ विदुरक भेल जन्म छल।
शिक्षा होमय लागल सभक भीष्मक संरक्षणमे,
भीष्मकेँ चिंता भेल विवाह कोना होयत गय,
धृतराष्ट्रक हेतु से खोजल एक कन्याकेँ।
शिवक वरदान छल गांधारीके सय पुत्रक,
बढ़त वंश शोचल ई प्रयत्न से शुरू कएल।
गांधार नरेश सुबल भेला तैयार जखन,
विवाह धृतराष्ट्रक भेल शकुनिक बहिन सँ।
सुनि पतिक अंधताक गप्प पट्टी बान्हल,
आँखि रहितहु नेत्रहीनक जिनगी गुजारल।
सय पुत्रक माता छल दुःशला एक पुत्री,
सिंधु नरेश जयद्रथ भेल जिनकर पति।

कृष्णक पिता वासुदेवक बहिन छलि पृथा,
शूरसेनक पुत्री छलीह रहलीह जाय मुदा,
पिताक पिसियौत कुंतीभोज छल संतानहीन,
हुनके स्नेह भेटल पृथा भेलि कुंती पुनि।
कृष्ण-सुदर्शन,बलरामक दीदी भेलीह ओऽ,
सत्कार विप्रवरक करैत छलीह ओऽ।
एहिना एक बेर दुर्वासा देल मंत्र एकटा,

पढ़ब मोनसँ देव आयत बजेबनि जिनका।
नेनमति बुद्धि छल सूर्यकँ बजाओल ओऽ,
पुत्र-प्राप्ति भेल कुमारियेमे से लोकलाज,
बाधक छल बहादेल बच्चा बिच गंगधार।

कौरवक सारथी अधीरथकँ भेटलथि ओऽ,
सारथी सूतक ओऽ माय राधा जनिक,
राधेयक नाम लेल सूतपुत्र पराक्रमी।
शरीर कवचयुक्त कान कुंडलसँ शोभित।
कर्ण नाम्ना छल राधेयक ओऽ पोषित।
तकर बाद पाण्डुक कुंतीसँ विवाह भेल।
मद्रनरेशक पुत्री माद्री दोसर पत्नी भेलि।
पाण्डु युद्ध-कार्य मात्र कएल जीति राज।
दूर रहि राज-काज भोगल सुख मात्र।
कुंती-माद्रीक संग वन-विचरण मे रत।
शिकार खेलाइत वनमे संग शृंखलताक।
एक मुनि श्राप देल संतानविहीनताक।
पाण्डुक मोनमे विरक्ति भेल शापसँ।
संतान प्राप्तिक ई इच्छा देखि कुंती,

खोललन्हि दुर्वासाक देल मंत्रक भेद।
मंत्रे यमसँ धर्मराज,भीमसेन वायुसँ,
इंद्रसँ अर्जुन कुंतीक पुत्र तीन भेल।
कुंतीक मंत्रसँ माद्रीकँ भेल पुत्रक आश।
अश्विनद्वय सँ भेल नकुल-सहदेव प्राप्त।
पाण्डुक मृत्यु पंचपाण्डव जन्मक बाद,
भेलीह सती पतिक संग माद्री वनहिमे।
पाण्डव ओऽ कुंतीकँ जंगलसँ हस्तिनापुर,
अनलन्हि नगरमे सभ वनक मुनिवर।
पंच पाण्डवक संग आयलि कुंती नगरमे।
जुमि गेल सभ नर नारी ठाम-ठामे।
ऋषि-मुनि वन प्राणीक संगतिमे शील।
मुग्धित सुशील पाण्डवकँ मोन भरि देखि गुणि।

कृपाचार्यक आचार्यत्वमे शिक्षा,
पाबि रहल दुर्योधन कौरव,
पाबि सकय छथि हुनके लग रहि,
पाण्डव जन सभ शिक्षा ई सभ ।
धृतराष्ट्र सोचि ई तखन कएल,
ताहि तरहक व्यवस्था,
दुर्योधन-कौरवक संग रहताह
पंच पाण्डव भ्राता।
भीम छलाह बलशाली सभमे,
दुर्योधनमे छल इरखा बड़।

करय लागल दुर्योधन भीमक,
मृत्यु योजना गंगे तट।

जल क्रीड़ाक हेतु गेल लय,
तट दुर्योधन पाण्डवकेँ।
खाद्य मध्य मिलाओल विष,
खोआओल भोजन भीमहिकेँ।
सभ गेल नहाबय गंगमध्य,
नशा भीमकेँ आयल,
कात अबैत खसलाह
ओतय भीम अड़रा कय ।
दुर्योधन बान्हल लताकुञ्ज सँ ।
फेकल धार ओकरा निश्चिंत,
त्रास मुक्त कौरवघुरि आयल।
गंग मध्य डँसलक एक नाग,
विष कटलक विषकेँ से देखू
काटत के पाण्डवक भाग।
विषक प्रभाव भेल दूर,
भीम चललाघरकेँ,
उठलाह झुमैत होइत मदमस्त,
कथा सुनाबय भ्राताकेँ।

युधिष्ठिर घरमे सोचथि,
भीम पहुँचि गेल होयताह।
नहि देखल घर भीम,
माथ पर बल अयलन्हि कनियेटा।
तावत भीम झूमि अयलाह,
षडयंत्रक कथा सुनाओल सभटा।
कुंती चिंतित भेलि विदुरसँ,
पूछलभेल ई नहि उचित।
विदुर बुझाओल पाण्डव,
छथि बलशाली किञ्चित।
हुनकर दुर्योधन करि पाओत,
नहि कोनो अहित।
भीमकेँ जिबैत देखि दुर्योधन-भ्राता,
मोन मसोसि रहि गेल ओ' दुष्ट दुरात्मा।

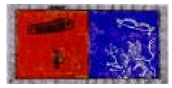
कौरव पाण्डव लीन कंदुक खेलि रहल।
कंदुक खसल इनारमे नहि निकलि रहल।
सोझहि छल एक ब्राह्मण बाटे आबि रहल,
तेज जकर ओकर महिमा छल गाबि रहल।
बाणक वार पुनि पुनि कएल फेर ऊपरसँ,
खेंचि कय निकालल गेंद धनुर्विद्याकौशलसँ।

भीष्मकेँ सुनायल बालवृन्द कलाकारी ओकर,
द्रोण नाम्ना कृपाचार्यक छल जे बहिनि वर।
अश्वत्थामा पुत्र जनिक सहपाठी द्रुपद छल।
द्रुपद देल एकवचन राज देब आध हम।
देल वचन बिसरलसे राजा बनला उत्तर।
अपमानित कएल से फूटि, राजा ओ' दंभी।
प्रतिशोधक बाट ताकि रहल बनि प्रतिद्वन्दी।
निर्धनताक जिनगी जिबैत छलाह घूमि रहल।
अश्वत्थामाक संग आजिविकाक खोजमे पड़ल।
हस्तिनापुरक आग्रह छलाह नहि टारि सकल।
कृतज्ञताक भारसँ अश्वत्थामा-द्रोण हस्तिनापुरक।
धनुर्विद्याक पाठ शुरु कएल कौरवक आ'पाण्डवक।
पाठक उपरांत समय आयल छल लक्ष्य भेदक।
परीक्षाक चातुर्यक संगहि कुशलताक रण-कौशलक।
लक्ष्य बनल एकटा गोट-बेश ऊँच वृक्ष पर,
राखल काठक चिड़ै आँखि जकर लक्ष्य छल।
सभकेँ पूछल द्रोण बाजू की छी देखि रहल?
सभ क्यो गाछ वृक्ष पक्षिक संग देखि रहल।

पार्थकेँ पूछल अहाँ छी कथी देखि रहल सकल।
माथ पक्षिक अतिरिक्त नहि किछु छी देखल।
अर्जुनक बाण पक्षिक शिरोच्छेदन कएलक।
अर्जुन भेलाह प्रिय-स्नेहिल द्रोणक हृदयक।

बीतल समय शस्त्र-प्रदर्शन छल आयल।

(अनुवर्तते)



4.कथा

2.गंगा-ब्रिज

1995मे नवम्बरक महीना।
केश कटायल मुँहेँ दरिभङ्गासँ पटनाक बस पर चढ़लहुँ।किछु किताब बेचिनहार अयलाह, तुक मिलेने सभ किताबक विशेषता कहि सुनओलन्हि।k खिस्सा-पिहानी,उपचार,फूलन-देवी सँ लय मनोहर पोथी तक सभ यात्रीगणकेँ एक-एक टा परसैत गेलाग।ओहिमे सँ किछु मोल-मोलाइ कएलाक उत्तर बिकयबो कएलन्हि आ' सभटा वापस लय जाइत गेलाह,बससँ उतरैत कालकंडक्टरसँ वाद-विवाद सेहो भेलन्हि। फेर नेबोक रस निकालबाक यंत्रक आविष्कारक चढ़लाह,रस निकालि देखओलन्हि,खलासीसँ वाद-विवादक उपरांत ओहो उतरि गेलाह।फेर ककबा बला,पेन बला आ' पेचकश बला सभ चढ़ि कय उतरैत गेलाह। पुछलाक उपरांत पता चलल जे गाड़ी साढ़े दस बजे खुजत ई गप्प बस बला झुट्ठे बाजल छल। पछुलका बसक सवारीकेँ सीट नहि भेटल छलन्हि, से बेशी अबेरो नहि होयत आऽ सीटो भेटि जायत,एहि तर्कक संग मार्केटिंगक उपकरणक रूपमे ई शस्त्र चलल छल।गाड़ी खुजबाक समय छल 11 बजे मुदा 11 बाजि कय पाँच मिनट धरि बहस होइत रहल जे घड़ीमे 11 बाजल अछि कि नहि।पाँछा एगारह बाजि कय दस मिनट पर जखन बादमे जायबला बसक कंडक्टर अशोक मिश्रा आऽ शाहीक बसक बीचक भिड़ंतक बात कय झगड़ा बजारि देलक-जे एको सेकेंड जौँ लेट होयत तँ'जे बुझु से' भय जायत- तखन ड्राइवर अकस्माते हॉर्न बजाबय लागल।हमरा बगलक सीट पर बैसलि एकटा बूढ़ि बेटाकेँ जोरसँ बजाबय लगलीह,पाँच मिनट गरदमगोल होइत रहल।सभ यात्री चढ़ि गेलाह, आऽ दू-चारिटा यात्री जे अखने रिक्शासँ उतड़ल छलाह, जोर-जोरसँ बाजय लगलाह।पछुलका बस बला हुनकर मोटा-चोटा उठा कय अपना बसमे लऽ जाय चाहैत छलन्हि,मुदा ओऽ लोकनि पढ़ल लिखल छलाह आऽ हमरे सभक बससँ जाय चाहैत छलाह। ओऽ लोकनि दू-चारिटा चौधरी-कुँअरक नाम-गाम गनओलन्हि, तखन ओहि बस बलाकेँ बुझओलैक जे ई सभ फसादी लोक सभ अछि-से कहलक जे टू बाइ टूक बदला ओहि टू बाइ थ्री धक्कागाड़ीमे
ठाढ़े जयबाके जौँ इच्छा अछि तँ हम की करू-किरायो ओऽ एको पाइ कम नहि लेत। से दू-चारि गोट बेशी यात्री लेबाक मनसूबा पूरा भेलाक बाद ड्राइवर गाड़ी हाँकि देलक। ओहि रिक्शा-सभ परसँ एक गोट अधवयसू व्यक्ति चढ़ल छलाह आऽ संयोग ई भेल, जे हमर दोसर बगलमे बैसलव्यक्ति गुनधुन करैत छलाह जे फलनाँ बड़ा बूड़ि अछि,एखन धरि नहि आयल।गाड़ी खुजलाक बाद अगिला चौक पर असकसा कय ओऽ उतरि गेलाह,आऽ तकर बाद ओहि टू बाइ थ्री ग़ाड़ीक तीन सीट बला हीसमे हमरा बगलमे ओहि सज्जनकेँ जगह भेटि गेलन्हि।

हमर मोन स्थिर छल आऽ बेशी बजबाक इच्छा नहि छल। मुदा बगलगीर पहिने अप्पन भाग्यकैँ धन्यवाद देलन्हि,जकर प्रतापे हुनका सीट भेटलन्हि। पटनामे आवश्यक कार्य छलन्हि, तैँ लेट जायबला बससँ गेला उत्तर काजमे भाङठ पड़ितन्हि। फेर अप्पन परिचय असिस्टेंट डायरेक्टरक रूपमे देलाक उपरांत ई सूचना देलन्हि जे दरिभङ्गाक संग पटनोमे हुनकर मकान छन्हि। दुनू घर अप्पन पुरुषार्थसँ बनयबाक गप्पक संग,दुनू घरक दुमहला आऽ मारबल आऽ ग्रेनाइटसँ युक्त होयबाक बातो कहलन्हि। बजबैका लोक कैँ सुनिनिहार लोक बड्ड पसिन्न पड़ैत छन्हि,से ओऽ हमरा पसिन्न करय लगलाह। तैँ पुछलन्हि-पटनामे अपनेक मकान कोन महल्लामे अछि।

हम कहलियन्हि-अप्पन मकान नहि अछि,किराया पर छी। पिताक मृत्युक उपरांत माँ केर मोन ओहि घरमे नहि लगतन्हि, ताहि हेतु ओऽ गाममे रहि गेल छथि। आब पटना पहुँचि कय दोसर डेरा ताकब।

हठात् एहि बातकैँ सुनि ओऽ हमर माथक केश दिशि ताकि कहलन्हि जे -ओऽ, आब बुझल।काटल केश देखि कय हमरा पहिनहिये जिज्ञासा करबाक चाही छल। पिताक क्रियाकर्मक हेतु गाम गेल छलहुँ।

किछु कालक शांतिक पश्चात ओऽ सज्जन पनबट्टीसँ पान बहार

कय हमरासँ पुछलन्हि जे पान खाइत छी। हमर नहि- एहि उत्तरक पश्चात अप्पन विशेषज्ञता देखबैत कहलन्हि, जे हमतँ अहाँक दाँते देखि कय
बुझि गेल छलहुँ।पान खेलाक बाद अप्पन बेटी सभक सासुरक चर्चा कएलन्हि। बेटाक आइ.ए.एस. केर तैयारी करबाक गप्प कएलन्हि आऽ कोनो ग्रुपक चर्चा सेहो कएलन्हि जे विद्यार्थी लोकनिक बीच एहि तैयारीक हेतु तैयार भेल छल,आऽ ओहि ग्रुपमे प्रवेश मात्र प्रतिभावान लोकनिक हेतु सीमित छल। फेर आखिरीमे ईहो पता चलल जे ओहि प्रतिभावान ग्रुपक सदस्यता हुनकर पुत्रकैँ सेहो प्राप्त छन्हि।

आँगा बढ़ैत-बढ़ैत गाड़ी एकटा लाइन होटल पर ठाढ़ भेल। किछु यात्री एकर विरोध कएलन्हि। एक गोटे कहलन्हि जे ई ड्राइवर-कंडक्टर खेनाइ खएबाक द्वारे एहि ग़टिया लाइन होटलमे गाड़ी रोकैत अछि। एकर सभक खेनाइ एतय मुफ्तिया छैक आऽ संगहि सूचना भेटल जे मुफ्तिया की रहतैक ओकर सभक बिल यात्रीगणसँ परोक्ष रूपमे लेल जाइत छैक आऽ बुझु जे एकर सभक बिल हमही सभ भरैत छी। हुनकर ईहो अपील छलन्हि जे क्यो गोटे नहि उतरय आऽ हारि कय बसकैँ स्टार्ट करय पड़तैक।किछु कालक उपरांत एकाएकी सभ गोटे उतरैत गेलाह आऽ ओऽ सज्जन सेहो खिसियायल उतरि प्राक भऽ ठाढ़ भय मिथिलांचलक दुर्दशाक कारणक व्याख्यामे हुनकर गप्प नहि मानबाक मनोवृत्तिकैँ सेहो दोषी करारि देलथिन्ह।

गाड़ी फेर खुजल आऽ किछु दूर आगू जा कय धक्काक संग ठाढ़ भय गेल। कंडक्टर कहलक जे सभ उतरैत जाऊ।गाड़ी पंक्चर भय गेल।लाइन होटल पर गाड़ी नहि रोकबाक अपील केनहार सज्जनक मत छलन्हि, जे लाइन होटल परजे गाड़ी ठाढ़ भेल, तखनेसँ जतरा खराब भए गेल अछि।आब आगू देखू की-की होइत अछि।नीचाँ उतरलाक बाद चारि-चारि,पाँच-पाँच गोटेक गोला बनि गेल।ई जगह प्रायः बैशालीक आसपास छल। एक गोटे खेतक विस्तारक दिशि ध्यान देलन्हि।घर सभक ऐल-फैल होयबाक सेहो चर्चा भेल।संगहि अपना सभक गाम दिशि घर पर घर आऽ
चाड़ पर चाड़ चढ़ल रहैत अछि-आऽ से झगड़ाक कारण अछि अहू पर चर्चा भेल। हमर बगलमे बैसल अधवयसू व्यक्ति किछु औंघायल सन छलाह, मुदा एहि व्यवधानसँ हुनकर भक्क टूटि गेलन्हि। हुनकर बकार
लाइन होटल पर आकि नीचाँ ठाढ़ भेला पर मन्द भय जाइत छलन्हि से हम अनुभव कएलहुँ। फेर बस चलि पड़ल आ ऽ ओऽ सज्जन पुनः शुरू भय गेलाह। हाजीपुर शहर अएला पर तँ हुनक स्मृति आर तीक्ष्ण भय गेलन्हि।किछु काल बस चललतँ एकटा कॉलोनीक दिशि इशारा कय ओऽ कहलन्हि- ई छी गंगा ब्रिज कॉलोनी,की छल आऽ आब की भय गेल अछि। एक भागमे रहबाक हेतु क्वॉर्टर आऽ दोसर भागमे गिट्टी-छड़-सीमेंट सभ भड़ल रहैत छल। आबतँ कॉलोनीक मेंटेनेंसो नहि भय रहल अछि।
हम चौँकि गेलहुँ। कहलियन्हि, एतय एकटा स्कूलोतँ छल। ओ ऽ सोझाँ एशारा दैत देखेलन्हि- देखू, ओतय नामो लिखल अछि। बरखा बुन्नीमे नाम अदहा-छिदहा मेटा गेल अछि। फेर ओ ऽ चौँकि कय पुछलन्हि-अहाँकैँ कोना बुझल अछि।

-हम एहि स्कूलमे पढ़ने छी।

-मुदा एहि कॉलोनीमे तँ गंगा पुल निर्माणक अभियंता लोकनि मात्र रहैत छलाह आऽ स्कूलमे हुनके बच्चा सभकैँ पढ़बाक हेतु एहि स्कूलक निर्माण भेल छल।

-हम सभ अही कॉलोनीमे रहैत छलहुँ।

-अहाँक पिताक नाम की छी।

-श्री कृपानन्द ठाकुर।

पिताक मृत्यु पंद्रह दिन पहिनहि भेल रहन्हि से स्वर्गीय कहबाक हिस्सक नहि पड़ल छल।

-अहाँ ठाकुरजीक पुत्र छी।
ई कहि हमरा दिशि ओ ऽ अपनत्वसँ बेशी ममत्वक दृष्टि देलन्हि।
-अहाँक नाम की छी।

-आइ.ए.आजम।ओ ऽ कहलन्हि।

तखन हम हुनका सभटा बच्चाक नाम गना देलियन्हि। हुनकर एकटा बेटा नेहाल आजम हमर क्लासमे पढ़ैत छल। आब हुनकर स्वर
बदलि गेलन्हि।

-कॉलोनीमे दू गोटे खूब पूजा करैत छलाह।एकटा पाण्डे जी आऽ दोसर अहाँक पिताजी। पाण्डेजीतँ पूजाक संग पाइयो कमाइत छलाह।मुदा अहाँक पिताजी छलाह पूर्ण ईमानदार आ ऽ दयालु।चंदा कय होम्योपैथिक दवाई कानपुरसँ अनैत छलाह, आ ऽ मुफ्त इलाज कॉलोनीबलाकैँ दैत छलाह। हमर बेटीकैँ माथमे बड़का गूर भय गेल छलैक।कोनो एलोपैथिक बलासँ ठीक नहि भेल छलैक। अहींक पिताजी ओकरा ठीक केने छलखिन्ह। इंजीनियर रहितहुँ होम्योपैथीक डिग्री हुनका रहन्हि।

ड्राइंग रूममे होम्योपैथीक छोट-पैघ, सादा-रंगीन शीशी सभ हमरा आँखिक सोझाँ आबि गेल।

-आइ काल्हि कतय पोस्टेड छथि।बहुत दिनसँ सम्पर्के टूटि गेल।एतुक्का बाद कतहु संगे पोस्टिंग सेहो नहि रहल।बुझू भैंट भेना पन्द्रह सालसँ ऊपर भय गेल अछि।

-पन्द्रह दिन पहिने हुनकर मृत्यु भय गेलन्हि।

हमर कटायल केश दिशि देखि ओ ऽ कहलन्हि-हमरे सँ गल्ती भेल। केश कटेने देखियो कय नहि पुछलहुँ। तँ अहाँ भरि रस्ता गुम्म छलहुँ।

फेर कहय लगलाह- मजदूरक प्रति बड्ड चिंता रहैत छलन्हि।तावत बस गंगा पुल पर आबि गेल छल।आगाँ फाटक पर बसकैँ टिकट कटेबाक हेतु ठाढ़ कय देल गेलैक। क्यो गोटे संवादो देलक जे आगू वन-वे जेकाँ अछि। एक कातमे रिपेयरिंग चलि रहल अछि।हमर आगाँ दृश्य घूमि गेल।एहि पुलक निर्माणकालक पाया सभ।कॉलोनीक टूटल देबालक पजेबा सभ।ओऽ देबाल सभ साल टूटैत छल।पिताजी कहैत छलाह जे एंजीनियर आऽ ठेकेदार सभ मिलल अछि। फेर मोन पड़ल सूटकेस भरल रुपैय्या। हमर पिताजी एक लात मारने छलाह आऽ सूटकेस दूर फेका गेल। एक

गोट पितयौत भाय रहैत छलाह-से सभटा रुपैय्या ओहि सूटकेसमे राखि ओहि ठिकेदारकैँ देलन्हि। माँ हमरा सभकैँ भितरिया कोठली दिशि लय गेलीह। एक बेर पिताजी पुलक पाया सभक लग स्टीमरसँ लय गेल छलाह आ ऽ कहलन्हि जे देखू।एहि पायाक निर्माणमे कतेक गोट मजदूर ऊपरसँ
घिरनी जेकाँ नाचि कय गंगामे खसि पड़ल। सयसँ ऊपर।कतेक हमरा आँखिक सोझाँ। ओहिमेसँ मात्र किछुए परिवारकैँ कंपेनसेशन देल गेलैक। आन सभक ने लिस्टमे नाम छैक, ने क्यो पता लगेलकैक।तैयो सभ अभियंता लोकनि ठिकेदारसँ मिलल अछि।

भक्क टूटल।बससँ उतरि ओहि पुलक निर्माणमे शहीद मजदूरक लिस्ट देखलहुँ।बहुत कम लोकक नाम छल-प्रायः बिन कंपेंनसेशन बलाक नाम नहि रहैक।
बस शुरू होयबाक सूरसार कएलक तँ हम आ ऽ आजम साहब बस पर धड़फड़ा कय चढ़लहुँ।

ओ ऽ पुनः बाजय लगलाह।-अहाँ कहलहुँ जे किराये पर रहैत छी। बुझू। तीस बरख पी.डबल्यु.डी. मे ईमानदारीसँ कार्य कएलाक उत्तर एकटा घरो नहि बना सकलाह। लोक की-की नहि कए गेल।हमहुँ 1981 क बाद अहींक पिताजीक लाइन पर चलय लगलहुँ।दू टा घरो जे बनयने छी से नामे-मात्रक दू-महला।अधखिज्जू-ऊपरमे एक-एकटा कोठली अछि। अहाँक पिताकैँ की देलकन्हि सरकार। आ ऽ की भेटलन्हि।रिटायरमेण्टक पहिनहि मृत्यु। ने कोनो सम्मान।पुलक उद्घाटन पर दू-दू हजार सभ अभियंताकैँ सरकार देलक। ओ ऽ तँ भगवानक रूप छलाह।सम्मानक लालसाक हेतु काज नहि कएलन्हि।सभ वर्क्स डिवीजनमे जयबाक हेतु पैरवी करय आ ऽ ई नन-वर्क्समे जयबाक हेतु पैरवी करथि। फेर ओ ऽ हमरासँ पुछलन्हि जे अहाँ की करैत छी।आ ऽ ई जनला पर जे दरिभङ्गामे हम नोकरी करैत छी आ ऽ पिता,माय आ ऽ भाय पटनामे रहैत छलाह, हमरासँ कहलन्हि।-दरभंगोमे आऽ पटनो मे आउ। मायोकैँ अनियन्हु।हमर पत्नीकैँ बड्ड नीक लगतन्हि। नेहालतँ पटनेमे अछि। फेर अपन पटना आ ऽ दरभंगा दुनू

ठामक पता अपन स्नेहिल हाथसँ पड़बैत पटनाक हार्डिंग पार्क बस स्टैण्ड पर उतरलाह।

बाहरसँ पटना अयला पर होर्डिंगकँ देखि हम प्रसन्न भय जाइत छलहुँ।मुदा पिताक छयाक दूर भेलाक बाद आब एहि नगरसँ लगाव नहि प्रतियोगिता करय पड़त हमरा।

5.पद्य 45 सँ आगाँ

45.दोषी

दोषी छह तौँ।
नहि छी मालिक।
देलक दू सटक्का।
हम छी दोषी बाजल,
तखन बता संगीक पता।
साँझ धरि पड़ल मारि,
परञ्च नहि बता सकल ओ',
नाम सङ्गीक।
कारण छल नहि ओ'दोषी,
नाम बतायत तखन कथीक।

46.कंजूस

तीमन माँगल भनसियासँ,
सूँघा रहल छल गमक।
कहियोतँ अयबह हमरा लग,
देबह तखन उत्तर।
शहर भगेलग पाइ कमेलहुँ,
माँगल पाइ किछु दैह,
बदला पाइक झनक सुनाबह,
गमकसँ नहि अछि मोन भरैत।

47.लंदनक खिस्सा

लन्दनक साउथ हॉलमे शहीद भिंडरा,
लेस्टरमे शहीद सतवंत-बेअंत,
नहि मानब हम गुरुकुलकैं,
होयत खिधांश सुनू तखन।

लेस्टरमे सभ अपने लोक,
नहि भेटैछ अंग्रेज एकोटा।
भेटने हमही मँगैत जाइत छी,
वीसा,पासपोर्ट सेहो सभटा।

48.रिपेयर

ऑफिसक तालाक रिपेयर केलक,
बिल मोटगर जखन देलक कारीगर,

हम पूछल एहि ड्रॉवरक तँ,
ताला नहि मह्ग छल,
रिपेयरसँ सस्तमे तँ,
नव ताला आयत गय।

औ' बाबू तखन कमीशन,
अहीं जाय आऊ द'।

49.अंध विश्वास

सुमेर पर्वतक चारू-कात,
निशान देखाय कहलक गाइड,
सर्पक चेन्ह ई जे,
भेल समुद्र-मंथन एहिसँ,
सर्प-रस्सा अछि चेन्ह छोड़ि गेल,
चारू-कात तहीसँ।

संगी हमर हँसल कहलक,
कोनो पहाड़ पर जाऊ,
पहाड़ ऊपर चढ़य लेल,
गोलाकार रस्ता बनबाऊ।
नहितँ सोझे ऊपर चढ़ब,
सोझे खसय नीचाँ लय,
हओ गाइड तोहूँ विश्वासक,
छह अंध-काण्ड सुनेबा लय।

50.गुड-वेरी गुड

भारतीय वाङ्मय केर,
व्याख्या एहि तरहेँ भेल,
जौँ किछु नीक भेल तँ नीक,
आ' जौँ उलटा तँ सेहो ठीक।

प्रारब्धक भेल मेल,
आ' लिखलहाक भेटबाक बात,
नीक भेल तँ गुड आ'
वेरी गुड जौँ भेल अधलाह।

51. दूध

प्रथम जनवरी देखल एक,
भोरे-भोर दूधक लेल,
लागि लाइन जखन आयल बेर,
खुशी-प्रफुल्लित पाओल फेर।
मुदा रस्ताक बीचहि खसल दूध,
ओह भेल अपशकुन बहुत।
सुनि खौँजाइ कहल नहि से,
पता नहि शकुने होअय जे।
कहल हँ-हँ शकुने थीक,
माँ पृथ्वीकेँ लागल अर्घ्य,
प्रथमे पायल प्रथमक भोग,
हरतीह सभटा दुःख आ' रोग।

52.अभ्यास

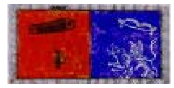
पूछल गुरूसँ मृदंगक गति,
भय रहल अछि मंद,
गुरु कहलन्हि से करू तखन,
अभ्यास तखन प्रतिदिन।

प्रतिदिनतँ करितहि छी,
हम एकर सदिखन अभ्यास,
तहुखन हमर घटय अछि,
गति आ' टूटय लय औ तात।

करू भोर साँझ अहाँ,
अभ्यास बिना करि नागा।

भोर करब अभ्यास जखन,
साँझमे टूटत नहि लय,
साँझमे करब पुनराभ्यास,
होयत भोरमे हाथ गतिमय।

गुरुसँ पूछल कोना जड़,
एहि पाथरसँ हम बनायब,
घोटक गतिमय बनबयमे,
हम माह जखन लगाओल।

कहल गुरू तखन देखू,
एहि जड़-पाथरमे घोटक,
जे बेशी लागय एहिमे,

तोड़ि हटाऊ अहाँ फटाफट।

कहल शिष्य ई काज,
अछि पहिलुक्का काजसँ हल्लुक।

कहल गुरू काज वैह अछि,
सोचबाक अछि ई फेर।

पहिने बेशी काज पड़ल छल,
आब थोड़ अछि भेल।

53.टी.टी.

मजिस्ट्रेट चेकिङ भेल।
वीर सभ भागल बाधे-बाधे,
खेहारलक पुलिस जखन।
चप्पल छोड़ल ओतय बेसुध तन।

मुदा बुरबक लाल एकटा,
चप्पल लेलक उठाय,
दोसर चप्पल छोड़ि पड़ायल,
आयल गाम हँफाइत।
सभ हँसि पुछलक हौ बाबू,
एकटा चट्टी लय कय,
कोन पैरमे पहिरब एकरा,
दोसर खाली होयत।
ई बुरबकहा बुरबके रहल।
हँसि भेड़ सभ भेल।

दोसर दिन बाध सभ गेल ओतय,
देखल सबहक दुनू चट्टी भेल निपत्ता,
बुरबकहाक एक चट्टिये छल बाँचल,
नहि लेलक सोचि करब की एकटा।
मुँह लटकओने सभ घूरल आ'
नाम बदललक बुरबकहाक,
टी.टी. बाबूकँ ठकलक ई,
नाम होयत सैह एकर आब।

54.आँखि

दादा पहुँचलाह डॉक्टर लग,
पुछल होइछ की बाबा,
मर्र डॉक्टर अहाँ छी,
बताऊ भेल की हमरा।
आँठासँ कय शुरू,

बताऊ पहुँचा धरिक समचार,
कहल पहिने करू ठीक,
आँखिकँ ओ' सरकार।
कोनो चश्मा नहि फिट पड़ल,
दूरबीनक शीशा जखन लगाओल,
कहल हँ अछि आब कोनहुना,
भाखय अक्षर चराचर।
सड़ही आम देखि बजलाह,
बूढ़ भेलहुँ हम अहाँ बुझय छी बच्चा,
बैलूनसँ खेलायब हम से वयस नहि अछि अच्छा।

यौ दादा ई सड़ही छी,
हम पड़ि गेल छी सोँचहि,
सड़ही आम अहाँ की देखब,
चश्माक नंबरे गलत पड़ल अछि।

55.हर आ' बरद

मोन गेल भोथियायल,
जोति बरद सोचिमे पड़लहुँ,
एतय-ओतय केर बात,
हर जोतने भेल साँझ,
हरायल बरद ताकी चारू कात।
कहबय ककरा ई गप्प,
सुनि हँसत हमरा पर आइ,
मोने अछि भोथियायल,
अप्पन सप्पत कहय छी भाय।

56.नरक निवारण चतुर्दशी

भुखले भरि दिन दिन बिति गेल,
नरक निवारण लय हम रहलहुँ,
साँझमे मंदिर विदा सभ भेल।
दुर्गापूजा लगमे आयल,
सिंगरहार केर चलती भेल।
माटि काटि गोबरसँ नीपि कय,
भोरे-भोर फूल लोढ़ि लेल।
सरस्वती पूजाक समय बैर,

अशोकक-गाछ-पात गोलीक लेल,
बोने-बोन महुआक फरक लेल,
घूमि-घामि अयलहुँ भेल-भेर।
अण्डीक बीया तेलहानीमे दय कय,
तरुआ ओकर तेलक खएल,
कुण्डली मिरचाइक फरमे अंतर,
बुझैत-बुझैत दिन कत' गेल।
सुग्गोकेँ ई खोआय रामायण,
सुनला कत्तेक दिन भय गेल।

57.नौकरी

नौकरी नहि करी तखन,
भेटय तनखा तन खायत,
वेतन भेटत बिना तनहि,
आब कते बुझायब।
गाम घूरि जौँ जायब,
खायब की कमलाक बालू,
औ गुलाब काका पहिने,
हमरा ईएह बुझाऊ।
भरि दिनका ठेही अछि जाइत,
जखन जाइत छी सूइत।
भोर उठला संता अखनहुँ,
समस्यासँ अछि नहि छूटि।

58.तीने टा अछि ऋतु

पुछल स्कूल किएक नहि अयलहुँ।

मास्टर साहेब होइत छल बर्खा,
जाइतहुँ हम भीगि।

बर्खामे जायब अहाँ भीगि,
गर्मीमे लागत लू-गर्मी,
आ' जाड़क शीतलहरीमे,
हाड़-हाड़ होइत जायब यौ,
बौआ होइत अछि ई तीनियेटा ऋतु,
सालमे पढ़ाई-पढय कहिया जायब यौ।

6. संस्कृत शिक्षा

संस्कृत भाषा शिक्षणे भवताम् सर्वेषाम हार्दम स्वागतम्।

नमो नमः।

संस्कृतम् अत्यंतम् सरला भाषा।

संस्कृते संभाषणम् इतोपि सरलम्।

वयम सर्वे अपि स्वल्पेण प्रयत्नेन नित्य जीवने संस्कृतस्य उपयोगम् कर्त्तुम शक्नुवः।

आगच्छन्तु।

वयम् एदानीम संस्कृत संभाषणस्य अभ्यासम् कुर्मः।

आरम्भे मम परिचय वदामि।

मम नाम गजेन्द्रः।

भवतः नाम किम्? (पु.)

भवत्याः नाम किम्?(स्त्री.)

उत्तिष्ठतु। वदतु। मम नाम किम?

मम नाम लक्ष्मीः/श्रीः/लता/रमा/प्रीति/प्रभा/स्वाति।
मम नाम रामः/श्यामः/राजेन्द्रः।

भवतः नाम गजेन्द्रः।
समीचीनम्।

भवत्याः नाम किम?

मम नाम रज्य लक्ष्मी।

न राज्य लक्ष्मीः।

मम नाम राज्य लक्ष्मीः।

बहु समीचीनम्।

संस्कृतेण प्रथ परिचयः करणीयः इति भवंतः ज्ञातवंतः।

उत्तिष्ठतु। आगच्छंतु।

सः उदयनः। सः शशिधरः।

सः कः।

सः उदयनः। सः शशिधरः।

उत्तमम्।
अभिनयम् कुर्वंतु।
वदंतु।

सः श्री अरविन्दः। सा श्रीमाँ।

सः कः। सा का।

सः श्री अरविन्दः। सा श्रीमाँ।

सः कः।सा का।

सः रामः।सा प्रिया।

का श्री माँ। सा श्री माँ।

तत् फलम्। तत् पुस्तकम्। तत् कृष्णफलकम्।

तत् किम्। किम् पुस्तकम्।

किम् वातायनम्।

एषः मंजुनाथः। सः उदयनः।

एषः कः। सः कः।

एषा प्रिया। सा श्रीमाँ।

एषा का। सा का।

एतत् पुस्तकम्/उपनेत्रम्/कङ्कतम्।
तत् कृष्णफलकम्/फलम्।

एतत् किम्। तत किम्।
एषः(पु.)/एषा(स्त्री.लि.)/एतत(नपु.लि.)- लग वस्तुक हेतु।
सः/सा/तत- दूर वस्तुक हेतु।

इदानीम् अहम् एकम् एकं वस्तुं दर्शयामि। एतत किम्।

तत उपनेत्रम। तत पर्णम्।

इदानीम भवंतः एकम् एकं वस्तुं दर्शयतु। एतत किम्? एतत किम्? पृच्छतु।

तत युतकम्- (अंगा)।

पेन- लेखनी।
पेंसिल- अङ्कणी।

एतेषाम् शब्दानाम अभ्यासं कृतवंतः। एतेषाम् उपयोगः कथम् करणीयः इत्यपि भवंतः ज्ञातवंतः।

फलम्/लेखनी/चशकः/जलम्/धनस्युतः अस्ति।

धनम् नास्ति।

श्री अरविन्दः कुत्र अस्ति।

सर्वत्र अस्ति।

युतकम् कुत्र अस्ति।

अत्र अस्ति।

वायुः सर्वत्र अस्ति।

जलम् कुत्र अस्ति।

अन्यत्र अस्ति।

भवतः वाहनः कुत्र अस्ति।

तत्र अस्ति।

सुभाषितम्

संस्कृत साहित्ये सुभाषितानाम् नितराम वैशिष्ट्यम अस्ति।
सुष्ठि भाषितम सुभाषितम। उत्तमम् वचनमेव सुभाषितः। अपार जीवनानुभवः सुभाषितेषु निहितः भवति।

वयम इदानीम एकं सुभाषितम् श्रुण्वः।

उद्यमनैव सिध्यंति कार्याणि न मनोरथैः।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशंति मुखे मृगा।

वयम् इदानीम यत सुभाषितम् श्रुतवन्तः तस्य अर्थः एवमस्ति।

मनुष्यःप्रयत्नम् न करोति चेत् किमपि फलम् न सिध्यति। केवलम् इच्छाः संति चेत् कार्यम् न सिध्यति। सिंहः अत्यंतं बलवानः अस्ति। सः मृगराजः अस्ति।तथापि सिंहः प्रत्नं करोति चेतेव आहारं प्राप्नोति। मृगः आगत्य स्वयमेव सिंहस्य मुखे न पतति।प्रत्नं न कुर्मः चेत् किंचिदपि फलम् न सिध्यति। वयमपि अवश्यं प्रत्नं कुर्मः।

कथा

अहम् इदानीम एकं कथा वदामि। लघु कथा सरलां कथा अस्ति।संस्कृते कथा श्रवणेन भाषाभ्यासः शीघ्रम् भवति। भवंताः सावधानेन कथाम् श्रुणवंतु।

एकः काकः अस्ति। सः काकः तृषितः अस्ति। तस्य बहु पिपासा भवति। जलम् पातव्यम इति इच्छा भवति। काकः जलस्य अंवेषणं करिति। अत्र पश्यति। तत्र पश्यति। सर्वत्र पश्यति। कुत्रपि जलं नास्ति। काकः अगे-अग्रे गच्छति। दूरे एकं घटं पश्यति।काकस्य बहुसंतोषः भवति। सः घटस्य समीपं गच्छति। घटस्य उपरि उपविशति। पश्यति। घटे जलम् अस्ति। परंतु स्वल्पं जलम् अस्ति। काकः जलम् पातुम न शक्नोति। किं करोमि-इति चिंतयति। सः काकः बुद्धिमानस्ति। सः अन्यत्र गच्छति। शिलाखण्डम् आनयति। घटे पूरयति। पुनः गच्छति। शिलाखण्डम् आनयति। पूरयति। एवमेव बहुवारः करोति।

जलम् उपरि-उपरि आगच्छति। जलं बहिः आगच्छति। काकस्य बहुसंतोषः भवति।सः जलं पिबति।आनन्देन जलं पिबति। अनन्तरं दूरं गच्छति।काकः चतुरः अस्ति खलु।चतुरः काकः।

कथायाः अर्थः ज्ञातः?

प्रयाण-गीतम्

पदं धरति प्रवर्धते, भारतीय वीर सैनिकः।
पदे पदे दृश्यते, तस्य देशप्रेम गुणः।
पदं धरति प्रवर्धते, भारतीय वीर सैनिकः।

गायति देश भक्ति गीत,स्वतंत्रता रक्षकः।
हस्ते अस्ति शोभितः त्रिवार्णिकः ध्वजः,
पदं धरति प्रवर्धते, भारतीय वीर सैनिकः।

मस्तके लेपित चन्दनः हस्ते अस्ति शस्त्रः,
यतः हृदये वसति वीरता, शत्रु भवति क्षयः।
पदं धरति प्रवर्धते, भारतीय वीर सैनिकः।

॥सिद्धिरस्तु॥

(अनुवर्तते)

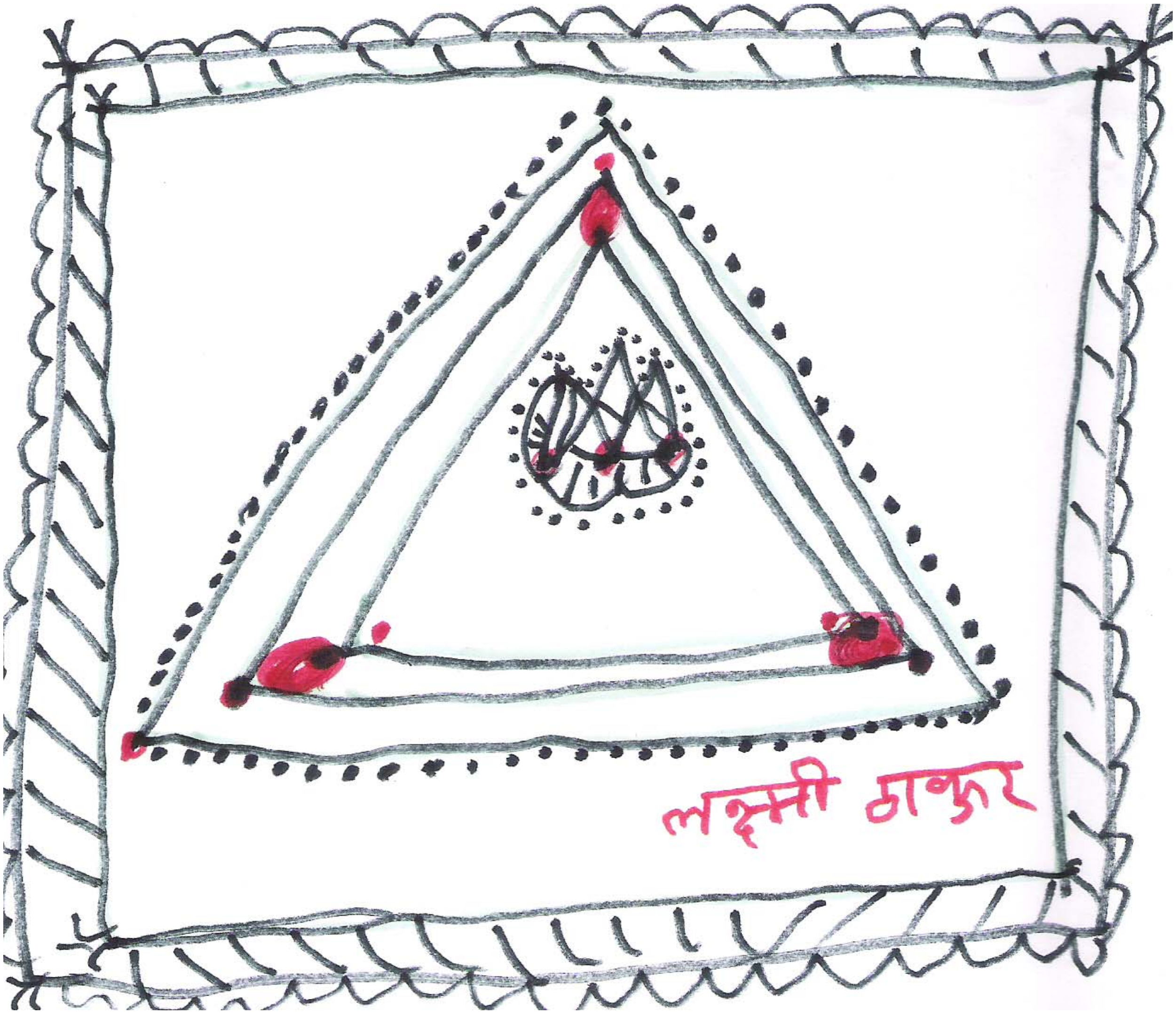
7.मिथिला कला-चित्रकला

पृथ्वी पूजा गौरी पूजा अरिपन

पिठारसँ त्रिभुज बनाऊ। त्रिभुज पृथवीक प्रतीक अछि।त्रिभुजक ऊपर दूटा आर त्रिभुज बनाऊ।ओकर चारूकात बिन्दू जे हिमकणक समान होय,बनाऊ।मध्यमे अनेक त्रिकोणसँ आऽतीन टा रक्त बिन्दु
युक्त गौरी यंत्र बनाऊ।

कोनो बर्खक माघ मासक मकरसंक्रांतिसँ अगिलामाघ मासक मकरसंक्रांति धरि विवाहक बाद स्त्रीगण गौरीपूजन करैत छथि।

सीताजीक गौरी पूजनक चर्च बाल्मीकि रामायणमे छैक।नीचाँ हमर माँक बनाओल ई चित्र अछि।



(अनुवर्तते)

8.बालानांकृते-

डाकूरौहिणेय

मगध देशमे अशोकक पिता बिम्बिसारक राज्य छल। संपूर्ण शांति व्याप्त छल मुदा एकटा डाकू रौहिणेयक आतंक छल।ओकर पिता रहय डाकू लौहखुर। मरैत-मरैत ओ' कहि गेल जे महावीर स्वामीक प्रवचन नहि सुनय आ' जौँ कतओ प्रवचन होय तँ अप्पन कान बन्द क' लय, अन्यथा बर्बादी निश्चित होयत। रौहिणेय मात्र पाइ बला के लुटैत छल आ' गरीबकेँ बँटैत छल,ताहि द्वारे गामक लोक ओकर मदति करैत रहय आ' ओ' पकड़ल नहि जा सकलछल। एक बेर तँ ओ' अप्पन संगीक संग वाटिकामे पाटलिपुत्रक सभसँ पैघ सेठक पुतोहु मदनवतीक अपहरण कय लेलक, जखन ओकर पति फूल लेबाक हेतु गेल रहय। जखन ओकर पति आयल तँ रौहिणेयक संगी ओकरा गलत जानकारी दय भ्रममे दय देलकैक। ओकरा बाद सुभद्र सेठक पुत्रक विवाह रहय।बराती जखन लौटि रहल छल तखन रौहिणेय सेठानी मनोरमाक भेष बनेलक आ' ओकर संगी नर्त्तक बनि गेल।नकली नर्त्तक जखन नाचय लागल, तखन रौहिणेय भीड़मे कपड़ाक साँप चूड़ि देलक। रौहिणेय गहनासँ लदल वरकेँ उठा निपत्ता भय गेल। राजा शहरक कोतवालकेँ बजेलक।ओ' तँ रौहिणेयकेँ पकड़बामे असमर्थता व्यक्त कएलक,आ' कोतवाली छोड़बाक बातो कएलक। मंत्री अभयकुमार पाँच दिनमे डाकू रौहिणेयकेँ पकड़ि कय अनबाक बात कहलक। राजा ततेक तामसमे छलाह जे पाँच दिनका बाद डाकू रौहिणेयकेँ नहि अनला उत्तर अभयकुमारकेँ गरदनि काटि लेबाक बात कहलन्हि।

डाकू रौहिणेयकेँ सभ बातक पता चलि गेल छलैक।अभयकुमार जासूस सभ लगेलक। रौहिणेयकेँ मोनमे अयलैक जे सेठ साहूकार बहुत भेल आब किए नहिराजमहलमे डकैती कएल जाय। ओ' राजमहल रस्ता पर चलि पड़ल। रस्तामे वाटिकामे महावीरस्वामीक प्रवचन चलि रहल छल। रौहिणेय तुरत अपन कान बन्द कए लेलक। मुदा तखने ओकरा पैरमे काँट गरि गेलैक। महावीर स्वामी कहि रहल छलाह-"देवता लोकनिकेँ कहियो घाम नहि छुटैत छन्हि।हुनकर मालाक फूल मौलाइत नहि अछि,हुनकर पैर धरती पर नहि पड़ैत छन्हि आ' हुनकर पिपनी नहि खसैत छन्हि। "

तावत रौहिणेय काँट निकालि कान फेर बन्न कए लेलक आ' राजमहलक दिशि चलि पड़ल।राजमहलमे सभ पहड़ेदार सुतल बुझाइत छल।मुदा ई अभयकुमारक चालि रहय।ओकर जासूस बता रहल रहय जे डाकू नगर आ' महल दिशि आबि रहल अछि।

जखने ओ' महलमे घुसैत रहय तँ पहरेदार ललकारा देलक। ओ' छड़पिकय कालीमंदिर मे चलि गेल। सिपाही सभ मंदिरकेँ घेरि लेलक। ओ' जखन देखलक जे बाहरसँ सभ घेरने अछितँ सिपाहीक मध्यसँ मंदिरक चहारदिवारी छड़पि गेल।मुदा ओतहु सिपाही सभ छल आ' ओ' पकड़ल गेल। राजा ओकरा सूली पर चढ़ेबाक आदेश देलकैक।मुदा मंत्री कहलन्हि जे बिना चोरीक माल बरामद केने आ' बिना चिन्हासीक एकरा कोना फाँसी देल जाय।रौहिणेय मौका देखि कय गुहार लगेलक जे ओ' शालि

गामक दुर्गा किसान छी,ओकर घर परिवार ओहि गाममे छैक।ओ'तँ नगर मंदिर दर्शनक हेतु आयल छल,ततबेमे सिपाही घेरि लेलकैक। राजा ओहि गाममे हरकारा पठेलक,मुदा ग्रामीण सभ रौहिणेयसँ मिलल छल।सभ कहलकैक जे दुर्गा ओहि

गाममे रहैत अछि मुद तखन कतहु बाहर गेल छल। अभयकुमार सोचलक जे एकरासँ गलती कोना स्वीकार करबाबी।से ओ' डाकूकेँ नीक महलमे कैदी बनाकय रखलक।डाकू महाराज ऐश आराममे डूबि गेलाह।

अभयकुमार एक दि न डाकूकेँ खूब मदिरा पिया देलन्हि।ओ'जखन होशमे आयल तँ चारू कातगंधर्व-अप्सरा नाचि रहल छल।

ओ' सभ कहलकैक जे ई स्वर्गपुरी थीक आ' इन्द्र रौहिणेयसँ भेँट करबाक हेतु आबत बला रहथि। रौहिणेय सोचलक जे राजा हमरा सूली पर चढ़ा देलक।मुदा ओ' सभतँ मंत्रीक पठाओल गबैया सभ छल। तखने इंद्रक दूत आयल आ' कहलक जे रौहिणेयकेँ देवताक रूप मे अभिषेक होयतैक,मुदा ताहिसँ पहिने ओकरा अपन पृथवीलोक पर कएल नीक-अधलाह कार्यक विवरण देबय पड़तैक।तखन रौहिणेयकेँ भेलैक जे सभटा पाप स्वीकार कय लय।मुदा तखने ओ देखलक जे दैव लोकक जीव सभ घामे-पसीने अछि,माला मौलायल छैक,पैर धरती पर छैक आ'पिपनी उठि-खसि रहल छैक।ओ' अपनपुण्यक गुणगाण शुरू कए देलक।अभयकुमार राजाकेँ कहलक जे अहाँ जौँ ओकरा अभयदान दय देबैक तँ ओ' सभटा गप्प बता देत। सैह भेलैक। रौहिणेय

नगरक बाहरक अपन जंगलक गुफाक पता बता देलकैक,जतय सभटा खजाना आ' अपहृत व्यक्ति सभ छल। राजा कहलन्हि जे किएक तँ ओकरा अभयदान भेटि गेल छैक ताहि हेतु ओ' सभ संपदा राखि सकैत अछि।मुदा रौहिणेय कोनोटा वस्तु नहि लेलक।ओ' कहलक जे जाहि महावीरस्वामीक एकटा वचन सुनलासँ ओकर जान बचि गलैक,तकरदीक्षा लेत आ' ओकर सभटा वचन सुनि जीवन धन्य करत।

9.पंजी-प्रबन्ध

पंजी प्रबन्धपूर्व मध्य कालमे ब्राह्मण कायस्थ आऽ क्षत्रिय वर्गक जाति शुद्धताक हेतु निर्मित कएल गेल। एहि अंकमे ब्राह्मणक पंजी-प्रबन्धक चर्च कएल जा रहल अछि।
कोनो ब्राह्मणक जाति शुद्धताक हेतु उतेढ़ जानब आवश्यक छल।उतेढ़ छल सात पुरुषक परिचय जाहि हेतु एहि बत्तीस कुलक परिचय आवश्यक छल-पिता एवं माताक पितामह एवं पितामही आऽ मातामह एवं मातामही केर पितामह एवं पितामही आऽ माता एवं मातामही केर पिता। आऽ एहि बत्तीस पूर्वजसँ विवाहयोग्य व्यक्ति सातम पड़बाक चाही।
एहि क्रममे श्रोत्रिय,योग्य आऽपंजीबद्ध श्रेणी भय गेल। जे पंजीबद्ध नहि छलाह से जएबार भेलाह।
उतेढ़मे *श्रोत्रिय* मातृपक्षमे पाँच पीढ़ी आऽ पितृपक्षमे सात पीढ़ी त्यागि विवाह करैत छलाह।

योग्य मात्र श्रोत्रियसँ एहि अर्थमे भिन्न छलाह जे ओऽ लोकनि पितृ-पक्षमे सातम पीढ़ीक त्याग करैत छलाह मुदा योग्य नहि करैत छलाह। ई लोकनि पितृ पक्षमे छः पीढ़ी आऽ मातृ पक्षमे पाँच पीढ़ीक त्याह कय विवाह करैत छलाह।

पंजीबद्ध लोकनि जिनका वंशज सेहो कहल जाइत अछि,मातृ पक्षमे चारि आऽ पितृ-पक्षमे छः पीढ़ी त्यागि कय विवाह करैत

छलाह।

19 प्रकारक गोत्र 34 प्रकारक मूल आऽ 243 प्रकारक मूलग्राममे ई सभ विभक्त छल। पुनः कर्मकाण्डक आधार पर सामवेदी आऽ शुक्ल यजुर्वेदी ब्राह्मणक दू गोट उर्ध्वाधिर विभाजन क्रमशः छन्दोग्य आऽ वाजसनेय ब्राह्मणक रूपमे बनले रहल।

(अनुवर्तते)

10.मिथिला आऽ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता

मिथिला आऽ संस्कृतक संबंध बड्ड पुरान अछि। षड् दर्शनमे चारि दर्शनक प्रारंभ एतयसँ भेल। वाजसनेयी आऽ छांदोग्यक रूपमे दू गोट वैदिक शाखा अखनो ओतय अछि, मुदा नामे मात्रेक। मिथिलामे कतोक लोक भेटताह जे मात्र विवाह कालमे वाचसनय आऽ छंदोग्यक नमसँ परिचय प्राप्त करैत छथि। बीच रातिमे पता चलैत छन्हि जे वर छांदोग्य छथि आऽ स्त्रीगणमे शोर उठैत अछि जे आबतँ दू विवाह होयत-बड्ड समय लागत।
वाजसनेयी आऽ छांदोग्य क्रमशः शुक्ल यजुर्वेद आऽ सामवेदक शाखा अछि से हम सभ बिसरि गेल छी। कार्यालयक कार्यावशात्
हम इंदिरा गाँधी नेशनल सेंटर अऑफ आर्ट्स गेलहु तँ वेद पर एक गोट डी.वी.डी. देखबाक अवसर प्राप्त भेल।अखनो ओड़ीसा,महाराष्ट्र,केरल,कर्णाटक,आ ऽ तमिलनाडुमे वैदिक शाखा जीवित अछि, मुदा अपना अहिठाम शाखा रहितहुँ नामोसँ अर्थोसँ अनभिज्ञता।

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना प्रधानमंत्री नरसिम्हा रावक प्रयासँ रामटेक,महाराष्ट्रमे खुजल। अल्पावधिमे ई वि.वि. संपूर्ण महाराष्ट्रमे वर्षावधि संस्कृत संभाषण शिविर चला रहल अछि। शिशुक हेतु 23 खंडमे किताब छपलक अछि,जखन की एकर भवन अखन बनिये रहल अछि।

का.सि.संस्कृत वि.वि. दरिभङ्गा बहुत रास संस्कृत-मैथिली काव्यक उद्धार कएलक मुदा आब जा कय एकर योगदान सालमे एकटा पतरा छपब धरि सीमित भय गेल छैक- आ ऽ ई विश्वविद्यालय पंचांग सेहो अपन गणनाक हेतु विवादमे पड़ि गेल अछि।

मुदा एहि अंकसँ हम एकर रचनात्मक कएल गेल कार्यक विवरण देब प्रारंभ कएल छी।

विश्वविद्यालय द्वारा 20 सालसँ ऊपर भेल जखन संस्कृत-प्राकृत देसिल बयना सँ युकत नाटक सभक आलोचनात्मक संस्करण प्रकाशित भेल,जे भाषा मिश्रणक कारणेँ जहिना ई संस्कृतक तहिना मैथिलीक रचनामे परिगणित होइत अछि।भावोद्रेकक लेल गीतराशिक रचना कोमलकांत मिथिलाभाषहिमे निबद्ध भेल।
विश्वविद्यालय द्वारा पहिल संपादित ग्रंथ ज्योतिरीश्वर ठाकुरक धूर्त्तसमागम अछि।
धूर्त्तसमागम तेरहम शताब्दीमे ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा रचल गेल। ज्योतिरीश्वर ठाकुर धूर्त्तसमागममे मैथिली गीतक समावेश कएलन्हि। ई प्रहसनक कोटिमे अबैत अछि।मैथिलीक अधिकांश नाटक-नाटिका श्रीकृष्णक अथवा हुनकर वंशधरक चरित पर अवलंबितएवं हरण आकि स्वयंबर कथा पर आधारित छल। मुदा धूर्त्तसमागममे साधु आऽ हुनकर शिष्य मुख्य पात्र अछि। धूर्त्तसमागम सभ पात्र एकसँ-एक ध्होर्त्त छथि।ताहि हेतु एकर नाम धूर्त्तसमागम सर्वथा उपयुक्त अछि।प्रहसनकेँ संगीतक सेहो कहल जाइछ,ताहि हेतु एहि मे मैथिली गीतक समावेश सर्वथा समीचीन अछि।एहिमे सूत्रधार,नटी स्नातक,विश्वनगर,मृतांगार,सुरतप्रिया,अनंगसेना,अस्ज्जाति मिश्र,बंधुवंचक,मूलनाशक आऽ नागरिक मुख्य पात्र छथि।सूत्रधार कर्णाट चूड़ामणि नरसिंहदेवक प्रशस्ति करैत अछि।फेर ज्योतिरीश्वरक प्रशस्ति होइत अछि। एहिमे एक प्रकारक एब्सर्डिटी अछि,जे नितांत आधुनिक अछि।जे लोच छैक से एकरा लोकनाट्य बनबैत छैक।

विश्वनगर स्त्रीक अभावमेब्रह्मचारी छथि।शिष्य स्नातक संग भिक्षाक हेतु मृतांगार ठाकुरक घर जाइत छथि तँ अशौचक बहाना भेटैत छन्हि। विश्वनगर शिष्य स्नातक संग भिक्षाक हेतु सुरतप्रियाक घर जाइत छथि। फेर अनंगसेना नामक वैश्याकेँ लय कय गुरु-शिष्यमे मारि बजरि जाइत छन्हि। फेर गुरु-शिष्य अनंगसेनाक संग असज्जाति मिश्रक लग जाइत छथि तँ ओतय मिश्रजी लंपट निकलैत छथि।...

(अनुवर्तते)

11.भाषा आऽ प्रौद्योगिकी (कंप्युटर,छायांकन,कीबोर्ड/टंकणक तकनीक)

प्रथम भागमे देवनागरी लिपिकेँ रोमन टाइपराइटरपर कोन टाइप करी-
पहिने www.bhashaindia.com पर जाकय हिन्दी IME V.5 डाउनलोड करू।
एहि प्रोग्रामकेँ अपना कंप्युटर पर इंस्टॉल करू। फेर कंट्रोल पैनलमे रेजनल आऽ लंग्वेज पर जा कय लंग्वेज टैबकेँ दबाऊ। देखू जे कॉम्प्लेक्स स्क्रिप्ट टिक कएल छैक की नहि।नहि छैकतँ करू आऽ कंप्युटर ताहि लेल जे जे कहैत अछि से करू। एकरा बाद लंग्वेज टैबकेँ आऽ डिटैल्स केँ दबाऊ।फेर ओतय एड क्लिक करू आऽ ओतय लंग्वेज मे हिन्दी आऽ कीबोर्ड मे HINDI INDIC IME 1[V.5.1] सेलेक्ट कय अप्लाइ दबाऊ। कंप्युटरकेँ रीस्टार्ट करू।
आब वर्ड डोक्युमेंट खोलू।बायाँ Alt+Shift केँ एक दू बेर सम्मिलित दबेला उत्तर H कीबोर्ड आयत।अथवा नीचाँ लंग्वेजकेँ क्लिक करू आऽ हिन्दी सेलेक्ट करू।कीबोर्डमे हिन्दी transliterationकेँ सेलेक्ट करू।

आब राम टाइप करबा लय raama टाइप करय करत। क् टाइप करबाक हेतु k दबाऊ आऽ माउसक लेफ्ट बटन क्लिक करू, अन्यथा सिफ्ट आकि एंटर दबेला पर हलंत उड़ि जायत।

(अनुवर्तते)

12.रचना लिखबासँ पहिने...............

साहित्यक दू विधा अछि गद्य आऽ पद्य।छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओऽ गद्य थीक।
छन्द माने भेल-एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए।

छन्द दू प्रकारक अछि।मात्रिक आऽ वार्णिक।
वेदमे मात्रिक छन्द अछि।
पहिने मात्रिक छन्द परिचय लिय। एहिमे अक्षर जिनती मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकेँ नहि गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक मात्रिक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकेँ। संगहि अ सँ ह केँ सेहो एक मात्रिक गानल जाइत अछि।द्विमात्रिक कोनो अक्षर नहि होइछ।मुख्य तीनटा बिन्दु यादि राखू-
1.हअलंतयुकत अक्षर-0
2.संयुक्त अक्षर-1
3.अक्षर अ सँ ह -1 प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू
ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=1+5+2+2+3+3+1=17 मात्रा

आब दोसर उदाहरण देखू

पश्चात्=2 मात्रा
आब तेसर उदाहरण देखू

आऽब=2 मात्रा
आब चारिम उदाहरण देखू

स्क्रिप्ट=2 मात्रा

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-गायत्री,उष्णिक् ,अनुष्टुप् ,बृहती,पङ् क्ति,त्रिष्टुप् आ ऽ जगती। शेष ओकर भेद अछि अतिछन्द आ ऽ विच्छन्द।
छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। यदि अक्षर पूरा नहि भेलतँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि।य आऽ
व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ ऽ उ लगा कय अलग केल जाइत अछि।
वरेण्यम्=वरेणियम्
स्वः= सुवः

गुण आ ऽ वृद्धिकेँ अलग कयकेँ सेहो अक्षर पूर कय सकैत छी।
ए = अ + ई
ओ = अ + उ

ऐ= अ+ए
=आ+ए

औ=अ+ओ
=आ+ओ

(अनुवर्तते)

13.आऽ अंतमे प्रवासी मैथिलक हेतु अंग्रेजीमे

VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT(आगाँ)

Of the ages that followed the age of sub-men or primitive men, the remains are so scanty in India that much cannot be said about any region, especially that of Mithila, which has been so far practically remained wholly unexplored.

There is a great paucity of material to eliminate the `Pre-Vedic' inhabitants of Mithila.The various types of skulls that were discovered at the site near Darbhanga Railway Station, which is called 'Harahi', (i.e. the site of bones), remained unclassified and unstudied.There is a pond there, in the name of 'Harahi'.All that is possible in the present state of our knowledge is to took forward to the study of some apparently primitive castes and tribes of Mithila. As early as the 5th century AD,several tribes made up the Vajjian Confederacy and one of the most important of them was 'Lichchhavis', who was held for a long time to be of foreign stock.

The names of other important ones are mentioned in the Jyotirisvara's Varnaratnakara. They are Tatama, Dhanukha, Goara, Khatbe, Amata etc.

In the earlier part of Satapatha Brdhmana it is mentioned that King Videgh Mathawa carried Agni in his mouth and he moved from Saraswati, in the Punjab, where the king dwelt),to Sadanira, drying up all the rivers. He did not, however, burnt Sadanira. The Brahmanas did not cross it,therefore, thinking it has not been burnt over by Agni Vaisvanar.But when Mathava reached the Sadanira,he asked the Agni where will be his dwelling and the reply was that he should live to the East of Sadanira.However it is fact that Ayodhya and Videha were long united and their Kings were of the same tree. It might mean that the reformed Brahmanism passed from the Bharata Kingdom to Ayodhya and then to Videha.The Videha country received Vedic culture long before the trine of the compilation of this Brahamana.In Brihaddrapyaka Upanishad which forms a

part of the Satapatha Brahmana Samrat Janaka is mentioned as a great patron of Vedic culture and it is said that the Videha Brahmanas were superior to the Kuru

Panchalas in the Upanishadic phase of the development of vedic culture.The vedic(Aryan) culture has taken its root long before the Brahmana age, most probably in the early

Samhita age of the Rigveda.The Yajurveda Samhita mentions the famous cows of Videha. The Vedic sites were unknown to the inhabitants of Mithila. Mathava Videgha's priest Gautama Rahugana is credited in the Satapatha Brahmana with the discovery of the Mitravinda sacrifice which is further said to have been revived by Emperor Janaka through Yajnaavalkya.Besides, earlier still, Nami Sapya, King of Videha (Vaideha-Raja) is held up as a memorable example of a monarch who successfully performed elaborate sacrifices and thereby reached heaven. As the name of this King appears in several passages in the Rigveda,very early period in the development of Vedic Culture in India.Rig Veda1.53,7 says that Nami was the friend and associate of Indra in quarelling the Asura Naaiuci,in the fight with Namuci Indra protected Nami Sapya.The priest Gautama Rahugana is one of the important Rishi in Rigved.

It may be noted that the Brahmanic culture must have made a very rapid progress In the country to justify its description in the latter part of the Satapatha Brahmana as the centre of intellectual activity of the age.The Mahdbharata attests that the Vedic lore was as popular in the East as anywhere else.In the Shanti Parva and in the Brihadaranyaka Upanishad, the authorship of Sukla Yajurveda is ascribed in clear terms to Yajnavalkya Vajasaneya, who belonged to Mithila.

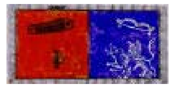
From a perusal of all these things it becomes clear that Mithila figures prominently in Ancient History from the very beginning of the Vedic period. Mithila was visited by Videgha Mathava and his followers and probably, its

marshes and jungles were cleared, and its soil was cultivated and a great and powerful kingdom was founded.Vedic Mithila knew other kings too, such as, Nami Sapya (Rigveda 1.53 .7) and Par Ahlara. Nimi Vaideha, who IS reported in certain Puranas to have founded this line of Kings in Mithila, is perhaps a later name of the king of Kings.At any rate, Videgha Mathava should be regarded as the earliest known King, if not the founder, of the Videha kingdom and of the
line of Vaideha Janaka. In course of time it seems that a

confederacy of kindered peoples known as the Kosala Videha, occupying a position no less important than that of the Kuru Panchalas, grow up at the time of the Redaction of the Brahmana.The Kingdom thus founded by the Vedic Mathava was in course of time ruled by the Vedic Samrat Janaka the contemporary of Aruni and Yajnavalkya, and Ashvapati, a king of the Kekayas. Majajanaka II,12th century BC,'s court was adored with the philosophers of Kosala and Kuru-Panchala such as Ashvala, Jaratkarava-Arthabhoga, Bujjya Lahyayanani, Vshasta Chakrayana Kahoda,Kausitakeya, Gargi Vachakuari, Uddalaka Aruni and Videgha Sakalaya Yajfvalkya Vajaseneya, who was a pupil of Uddalaka Aruni. In the Mahabharata the Mithila King is said to have sided with the Duryodhana because he had learnt the science of fighting with mace from the latter. Bhima and Karna are said to have conqured Mithila. One Karala Janak made a lascivious attempt on a Brahmin maiden leading to the overthrow of the monarchy and that was followed by the rise of a republic, the Vajjian confederacy.The Mahabharata and Ramauyana mentions a great battle between Pratardana, King of Kasi Janaka King of Mithila.The Vajjian confederacy, were the offsprings of a queen of Kasi.

The Videha ended on the west by the Sitamarhi, Muzaffarpur andVaishali districts, on the east by the Kosi and the Mahananda rivers in the south by the Ganges and on the north by the lower ridges of the Himalayas. It includes the following areas-North Bihar excluding the Saran region and the Champaran-Muzaffarpur region,i.e,theMadhubani,DarbhangaSamastipur districts, the Begusarai district and Araria sub-district,the Saharsa district,the npart of the Bhagalpur district,Khagaria district and the Purnea and Katihar and the Nepalese Terai contiguous with the northernmost parts of the Madhubani, Saharsa and Purnea. The ancient most name for this region available in literature is Videha.It is possible that a small tract of the Sitamarhi district might have formed part of the

state of Videha and not of Vaisali during the reign of Siradhwaja Janaka.The tribe which inhabited the area east of the Gandaka,the Videhan state with its capital at Mithila usually identified with Janakpur in the Nepalese Terai situated at a distance of 14 miles from Jaynagar Railway Station on the Indo-Nepal border and Videha as a geographical term which included the Vaisali state also, along with the Videha state within its borders. It was in this last sense that Kundgrama-near Vaisali, the birthplace of Mahavira, is placed in Videha and that the mothers of Mahavira and Ajatasatru, which were the sister and daughter respectively of Chetaka, the Lichchhavi leader cf Vaisali, are called Videhadatta and Vedehi respectively.There is no controversy whatsoever with regard to its northern and southern frontiers. The Sadanira river acted as the boundary between Videha or Vaisali and its western neighbour Kosala but its identification has been a matter of some dispute. It is identified by the Indian lexicographers with the Karatoyas modern Kurate which flows through the Bogra district in Bangladesh but this seems to be too far east. On the ground that the Mahabharata distinguishes the Gandaki from the Sadanira, it is held that the Sadanira was the Rapti. But it is the Gandaki-the Kondochates of the Greek geographers. The Sadanira flows from the northern Himalaya mountains and formed the boundary between Kosala and Videha and its waters are never exhausted.From the bank of the Great Gandak to the forest of Champa the country is called Videha, also known as Tirabhukti. This name is found some of the Basarh seals as one of the provinces of the Gupta empire. Purnea seems to have been the easternmost district of Videha or Tirabhukti and in that case the Kosi or Mahananda would naturally form the boundary between Videha and Pundra.The ancient kingdom of Anga does not seem to have extended north of the Ganges, because there is no clear indication of this in ancient literature. The forest in which Rishyasringa son of Kasyapa Vibhapdaka, lived is said to have bordered on Anga, and the whole of this quaint story thatRishyasringa being beguiled by the courtesans of Malini into a boat and brought down the river to the capital of Anga implies that he was living within the territory of Anga, for no embassage was sent to any other king for permission to bring him away, as when Dasratha paid a special visit to Lomapada to invite the Rishi's attendance at Ayodhya to perform the sacrifice which was to bless the king with a son.The Epics has no reference to the effect that Rishyasringa's hermitage lay in Anga.It was situated on the Kosi river near some mountain. Dasaratha's visit was necessitated by the fact that Rishyasringa happened to he the son-in-law of the Anga king and not because he was living within the territory of Anga.The Kausiki is one of the most ancient rivers of India It is frequently mentioned in the Epics and the Puranas. It has ever been a shifting river,its playground being the area between the river Mahananda in the district of Purnea on the east and the river Balan in the old district of Darbhanga on the west. Kosi in some remote period joined the Mahananda through the river Panar also called the Parman



near Araria. The belief of the local people is that at some bygone time the Kosi used to flow along the course of the Panar this river, the Panar also in its short course through the Nepalese territory is called the Burhi(old) Kosi.The Buddhist conception of Videha differ from the above because the Buddhists mention Vajji and Videha as two distinct geographical and political entities.But sometimes they interchange Vaisali and Videha.Ajatashatru, son of a Vaisali princess, is called Vaidehiputra in Buddhist literatureThe Taitariya Samhita of Yajurveda mentions the cows of videha as famous in India in the Vedic times.The commentator of the Taitariya Samhita explains the adjective Vaidehyah-plural of Vaidehi by vishishta dehasambandhinyah-having splendid bodies the portion translated by Keith is-Indra slew Vritra,from the head of Vritra came out cows, they were of Videha, behind them came the bull.Apparently cows of Videha were especially famous.The regular genealogy of the Janaka dynasty of Videha does not go beyond the Mahabharata War.Nimi Videha was the founder of the Videhan state and its capital town called Jayanta and his son Mithi Janaka Vaideha as that of Mithila city.The co-operation of Gautama-a priestly dynasty, was readily available to the family. It appears Jayanta was soon abandoned in favour of a more strategic place, Mithila.The Puranas mention Jayanta and Mithila, as the early and later capitals of Videha. The Buddhist literature does not know Jayanta but speaks of Mithila only. The Tripitaka commentaries state that Videharattha was colonised by the inhabitants who were brought by king Mandhata from Pubbavideha, the eastern sub-continent of Asia, placed to theeast of Mount Sumeru. This Mandhata, who was at Rajagriha.The Buddhist tradition provided in the Digha,the division of India among the sons of Manu says that this country was divided into seven political units and Renu, son of Disampati, was allotted Mithila in the country of the Videhas.Mithila was founded by Mahagovinda, the steward of king Renu. Disampati and Renu were kings or chieftains in Banaras or king of the Kurus are referred to, apparently as kings of Banaras, at Dipavamsa.The Videhan state was founded by Nimi Videha, son of Ikshvaku, who also founded a town called Jayanta. He dwelt in a town famed as Vaijayanta or Jayanta. This town was situated near the ashrama of Gautama and also near the Himavat mountain. Nimi instituted a sacrifice that was to last for a thousand years and requested Vasishtha to preside. Vasishtha said that he had already been engaged by Indra in a sacrifice which would last for five hundred years and asked him to wait for the period. Nimi in the meantime employed Gautama and other Rishis for his sacrifice.On the completion of the sacrifice of Indra Vasishtha hastened to Nimi but found Gautama and others.He cursed Nimi that henceforth be body-less (vi-deha).Nimi cursed Vasishtha in return and both abandoned their human bodies.Nimi's dead body was preserved in oil and scents till the completion of the sacrifice. The sages then agitated his body and consequently a boy was born, who was called Janaka because of being self-born, Videha because of being Mini

Videha's son and Mithi because of his birth from agitation-manth- to churn.A great sacrifice of the glorious Nimi, the king of the Videhas, is referred to in the Bhagavata.The Vedic texts know of a king of Videha Nam Sapya, is nowhere indicated as the founder of the Videhan royal family.Nimi has been mentioned at several places in the Mahabharata, but generally his territory is not stated. At one place he has been called a Vaideha which removes the doubt with regard to his territory. There it is stated that he gave his kingdom to the Brahmanas. The Videhan dynasty, being a branch of the Ikshvakus, is called the solar dynasty who did not eat meat during the month of Kartika. We are not quite sure if this Nimi is the first king of the dynasty or the penultimate sovereign, who is frequently mentioned in Buddhist literature. Sadanira,she that is always filled with water which is more probably the Gandaki. Agni Vaisvanara,the fire that burns for all men,fire which is the common property of all men,not sacrificial fire, but fire in its ordinary everyday use applied to human wants. The primeval forests from the Sarasvati to the Sadanira, and there the course of the colonising Aryas stopped until Mathava carried Agni to the east of the latter river. If Agni Vaisvanara went burning along the earth from the Sarasvati to Videha,Agni burnt over the Paurava territory-including North Panchala and the Ayodhya realm, two of the most famous and best cultivated regions even in early times-which is absurd. If itenshrines any historical truth it might mean that the reformed Brahmanism passed from the Bharata kingdom to Ayodhya and then to Videha. The Videha ended on the west by the Sitamarhi, Muzaffarpur andVaishali districts, on the east by the Kosi and the Mahananda rivers in the south by the Ganges and on the north by the lower ridges of the Himalayas. It includes the following areas-North Bihar excluding the Saran region and the Champaran-Muzaffarpur region,i.e,theMadhubani,DarbhangaSamastipur districts, the Begusarai district and Araria sub-district,the Saharsa district,the npart of the Bhagalpur district,Khagaria district and the Purnea and Katihar and the Nepalese Terai contiguous with the northernmost parts of the Madhubani, Saharsa and Purnea. The ancient most name for this region available in literature is Videha.It is possible that a small tract of the Sitamarhi district might have formed part of the state of Videha and not of Vaisali during the reign of Siradhwaja Janaka.The tribe which inhabited the area east of the Gandaka,the Videhan state with its capital at Mithila usually identified with Janakpur in the Nepalese Terai situated at a distance of 14 miles from Jaynagar Railway Station on the Indo-Nepal border and Videha as a geographical term which included the Vaisali state also, along with the Videha state within its borders. It was in this last sense that Kundgrama-near Vaisali, the birthplace of Mahavira, is placed in Videha and that the mothers of Mahavira and Ajatasatru, which were the sister and daughter respectively of Chetaka, the Lichchhavi leader cf Vaisali, are called Videhadatta and Vedehi respectively.There is no controversy whatsoever with regard to its northern and southern

frontiers. The Sadanira river acted as the boundary between Videha or Vaisali and its western neighbour Kosala but its identification has been a matter of some dispute. It is identified by the Indian lexicographers with the Karatoyas modern Kurate which flows through the Bogra district in Bangladesh but this seems to be too far east. On the ground that the Mahabharata distinguishes the Gandaki from the Sadanira, it is held that the Sadanira was the Rapti. But it is the Gandaki-the Kondochates of the Greek geographers. The Sadanira flows from the northern Himalaya mountains and formed the boundary between Kosala and Videha and its waters are never exhausted.From the bank of the Great Gandak to the forest of Champa the country is called Videha, also known as Tirabhukti. This name is found some of the Basarh seals as one of the provinces of the Gupta empire. Purnea seems to have been the easternmost district of Videha or Tirabhukti and in that case the Kosi or Mahananda would naturally form the boundary between Videha and Pundra.The ancient kingdom of Anga does not seem to have extended north of the Ganges, because there is no clear indication of this in ancient literature. The forest in which Rishyasringa son of Kasyapa Vibhapdaka, lived is said to have bordered on Anga, and the whole of this quaint story thatRishyasringa being beguiled by the courtesans of Malini into a boat and brought down the river to the capital of Anga implies that he was living within the territory of Anga, for no embassage was sent to any other king for permission to bring him away, as when Dasratha paid a special visit to Lomapada to invite the Rishi's attendance at Ayodhya to perform the sacrifice which was to bless the king with a son.The Epics has no reference to the effect that Rishyasringa's hermitage lay in Anga.It was situated on the Kosi river near some mountain. Dasaratha's visit was necessitated by the fact that Rishyasringa happened to he the son-in-law of the Anga king and not because he was living within the territory of Anga.The Kausiki is one of the most ancient rivers of India It is frequently mentioned in the Epics and the Puranas. It has ever been a shifting river,its playground being the area between the river Mahananda in the district of Purnea on the east and the river Balan in the old district of Darbhanga on the west. Kosi in some remote period joined the Mahananda through the river Panar also called the Parman near Araria. The belief of the local people is that at some bygone time the Kosi used to flow along the course of the Panar this river, the Panar also in its short course through the Nepalese territory is called the Burhi(old) Kosi.The Buddhist conception of Videha differ from the above because the Buddhists mention Vajji and Videha as two distinct geographical and political entities.But sometimes they interchange Vaisali and Videha.Ajatashatru, son of a Vaisali princess, is called Vaidehiputra in Buddhist literatureThe Taitariya Samhita of Yajurveda mentions the cows of videha as famous in India in the Vedic times.The commentator of the Taitariya Samhita explains the adjective Vaidehyah-plural of Vaidehi by vishishta dehasambandhinyah-having splendid bodies the portion translated by Keith is-Indra

slew Vritra,from the head of Vritra came out cows, they were of Videha, behind them came the bull.Apparently cows of Videha were especially famous.The regular genealogy of the Janaka dynasty of Videha does not go beyond the Mahabharata War.Nimi Videha was the founder of the Videhan state and its capital town called Jayanta and his son Mithi Janaka Vaideha as that of Mithila city.The co-operation of Gautama-a priestly dynasty, was readily available to the family. It appears Jayanta was soon abandoned in favour of a more strategic place, Mithila.The Puranas mention Jayanta and Mithila, as the early and later capitals of Videha. The Buddhist literature does not know Jayanta but speaks of Mithila only. The Tripitaka commentaries state that Videharattha was colonised by the inhabitants who were brought by king Mandhata from Pubbavideha, the eastern sub-continent of Asia, placed to theeast of Mount Sumeru. This Mandhata, who was at Rajagriha.The Buddhist tradition provided in the Digha,the division of India among the sons of Manu says that this country was divided into seven political units and Renu, son of Disampati, was allotted Mithila in the country of the Videhas.Mithila was founded by Mahagovinda, the steward of king Renu. Disampati and Renu were kings or chieftains in Banaras or king of the Kurus are referred to, apparently as kings of Banaras, at Dipavamsa.The Videhan state was founded by Nimi Videha, son of Ikshvaku, who also founded a town called Jayanta. He dwelt in a town famed as Vaijayanta or Jayanta. This town was situated near the ashrama of Gautama and also near the Himavat mountain. Nimi instituted a sacrifice that was to last for a thousand years and requested Vasishtha to preside. Vasishtha said that he had already been engaged by Indra in a sacrifice which would last for five hundred years and asked him to wait for the period. Nimi in the meantime employed Gautama and other Rishis for his sacrifice.On the completion of the sacrifice of Indra Vasishtha hastened to Nimi but found Gautama and others.He cursed Nimi that henceforth be body-less (vi-deha).Nimi cursed Vasishtha in return and both abandoned their human bodies.Nimi's dead body was preserved in oil and scents till the completion of the sacrifice. The sages then agitated his body and consequently a boy was born, who was called Janaka because of being self-born, Videha because of being Mini Videha's son and Mithi because of his birth from agitation-manth- to churn.A great sacrifice of the glorious Nimi, the king of the Videhas, is referred to in the Bhagavata.The Vedic texts know of a king of Videha Nam Sapya, is nowhere indicated as the founder of the Videhan royal family.Nimi has been mentioned at several places in the Mahabharata, but generally his territory is not stated. At one place he has been called a Vaideha which removes the doubt with regard to his territory. There it is stated that he gave his kingdom to the Brahmanas. The Videhan dynasty, being a branch of the Ikshvakus, is called the solar dynasty who did not eat meat during the month of Kartika. We are not quite sure if this Nimi is the first king of the dynasty or the penultimate sovereign, who is frequently mentioned in Buddhist literature.

Sadanira,she that is always filled with water is more probably the Gandaki. Agni Vaisvanara,the fire that burns for all men,fire which is the common property of all men,not sacrificial fire, but fire in its ordinary everyday use applied to human wants. The primeval forests from the Sarasvati to the Sadanira, and there the course of the colonising Aryas stopped until Mathava carried Agni to the east of the latter river. If Agni Vaisvanara went burning along the earth from the Sarasvati to Videha,Agni burnt over the Paurava territory-including North Panchala and the Ayodhya realm, two of the most famous and best cultivated regions even in early times-which is absurd. The reformed Brahmanism passed from the Bharata kingdom to Ayodhya and then to Videha.Videgha Mathava, who led the Aryans from the Sarasvatt to colonise Mithila, and his great priest Gautama Rahugana wandered through the northern Himalayan regions till they came to the upper reaches of the river Gandak, and laid the foundation of the Mithila kingdom to the north of what formed the kingdom of Vaisali. Sadanira flowing from the northern mountain also indicates that the people coming might have passed through an area from which it could see clearly that the river came from the northern mountain. Moreover, there are places in the northern part of the Champaran region, Jankigarh eleven miles to the north of Lauriya Nandangarh-which are associated with the rule of the Janaka dynasty. This tradition may lend support to the supposition that Videgha Mathava might have proceeded to Videha through this region.The word Janaka has a reference to the tribe, jana and the best or the leader of the janas was called Janaka. Thus Videgha Mathava, who led the party, might be called a Janaka.In the Buddhist tradition the founder of the royal line of Videha is Makhadeva who is represented as the king of Mithila. For successive periods of 84000 years each he had respectively amused himself as prince, ruled as viceroy and reigned as king. He one day asked his barber to tell him as soon as he had any grey hairs. When many years later the barber found a grey hair, he pulled it out and laid it on the king's palm as he had been requested. The king had 84000 years yet to live, but he granted the barber a village yielding one hundred thousand and on that very day gave over the kingdom to his son and renounced the world as though he had seen the king of Death. For 84000 years he lived as a recluse in the Makhadeva-amhavana, and was reborn in the Brahma-world. Although the figure 84000 is merely conventional and has no significance, the story is inclined towards asceticism.The scene of the finding of a grey hair is marvellously sculptured on a railing of the Bharhut stupa. In this scene Maghadeva or Mahadeva,king of Videha, is upset at the sight of a grey hair picked up from his head and resigns his kingdom in favour of his eldest son. He is seated on a throne that resembles one of the modern fashionable chairs. His face is clean shaven. The prince stands gently before him. The barber stands behind him with his shaving pot. The Buddhist tradition calls Makha-deva founder of the royal line but his capital is said to be Mithila. Makhadeva founded Jayanta

and made a beginning of the foundation of another town later called Mithila. The Vedic tradition furnished by the Satapatha Brahmana the identification of the first Videhan king of the Puranas with the first Videhan king of the Vedic account is proved by a fact that Gotama is the priest of that king in both the accounts. The only apparent difference between the accounts is the one concerning the name of the first Videhan king, the Puranas call him Nimi, the Satapatha-Brahmana calls him Mathava. But the name given in the Satapatha Brahmana is clearly a patronym, meaning son of Mathu. Thus, while the Puranas call the king by his proper name, the Satapatha-Brahmana calls him by his patronym. The surname of the king is the same in both the accounts- Videha in the Puranas and its Vedic form Videgha in the Satapatha Brahmana. Nimi, the founder of the Videha dynasty was not a son but a descendant of Ikshvaku. Nimi was a contemporary of the rishi Gotama, near whose hermitage he built a city named Jayanta. As no rishi of the name of Gotama is ever included by the Puranas among those primaeval sages who were the contemporaries cf Manu and his sons, Nimi, the contemporary of Gotama, could not have been a son oflkshvaku. Thus, the identification of the first Videhan king of the Puranas (Nimi Videha) with the first Videhan king of theVedic account (Videgha Mathava) is proved by the fact that Gotama is the priest of that king in both the accounts.No Videha king is ever mentioned in the Puranas in connection with any early person or event,. which means that the Videha dynasty did not exist in early times, and so could not have been founded by Ikshvaku's son.The list of the Videha kings itself lends support to this.This list gives some 51 names. The certain point where a synchronism exists is the reign of Siradhvaja, who was a contemporary of Dasaratha. The Puranas give the account of only three dynasties.The certain descendants of Trasadasyu mentioned in the Rigveda, such as Mitratithi, Kuru Sravana and Iipama. It was Bhagiratha who left his ancestral kingdom on the western confines of the Punjab and marching hundreds of miles with his army and other subjects, reached the river Ganga, which he gave the name of Bhagtrathi. To the east of the Ganga he founded a kingdom named Kosala with its capital at Ayodhya on the bank of the Sarayu, a tributary of the Ganga. The Sarayu and the Gomati , two of the chief rivers of Kosala, were named after the tributaries of the river Sindhu. The conquest of the Gangetic territory of Kosala by Bhagiratha was soon followed by the conquest of the region to its east by another prince of the Ikshvaku family named Nimi Mathava. Mathava belonged to that branch of the Ikshvakus that had earlier settled on the banks of the Saraswati. He left the Sarasvati river and accompanied by his priest Gotama Rahugana crossed the river Sadanira and colonised Videha. Gotama built an ashrama in this country and Nimi founded a town named Jayanta near that ashrama. Nimi was succeeded by Mithi Janaka who founded the city of Mithila that became the capital of Videha. Some twelve generations after Bhagiratha of Kosala and Nimi Mathava of Videha, an Ikshvaku prince named Visala, who was a scion of

either the Kosala or the Videha dynasty found a new kingdom in the vicinity of Videha. This kingdom was named Vaisali after its capital, which was founded by and named after Visala.Mithi Janaka was the son of Nimi Videha. The Bhagavata Purana calls him Mithila instead of Mithi. The Garuda Purana, though it gives the genealogy of Videha kings, does not mention Mithi because due to the loss of some verses closing the Ikshvaku dynasty of Ayodhya and introducing the Videhan line. Prasuilruta-a king of Ayodhya father of Udavasu-Vlithi's son- of the Videhan line. The Ramayana makes Mithi Janaka two kings.Mithi, being son of Nimi Videha, is also known as Vaideha.

Mithi is celebrated as the founder of Mithila. Jayanta founded by Nimi did not prove to be a good capital and need was felt to proceed further north. Mithila is identified with modern Janakpur in the Nepalese Terai. It is regarded as a sacred spot by the Hindus and is visited by many pilgrims every year. It is rather strange that while in other kingdoms capitals were generally founded on the banks of the rivers. Mithi established his capital at Janakpur in the Nepalese Terai, so close to the Himalayan mountains.The plain area of the old Muzaffarpur district had already been seized by the state of Vaisali founded by the son of Manu. So the Videhan state, founded by Manu's grandson and strengthened by his great grandson Mithi, might establish its capital either in the old Darbhanga district, which must have been very marshy at that time or in the sub Himalayan area. The hilly tribes must have been very turbulent and hence it might have been considered expedient to have the capital there. An adjective meaning valorous was used for Mithi in two Puranas may have a reference to the defeat of the hill tribes. The Himalayan area was considered particularly sacred from the point of view of asceticism or performance of rites. Janaka got instruction from Chyavana Bhargava. We do not find any direct or even indirect details about the successors of Mithi Janaka till we come to the time of Siradhvaja and his brother Kusadhvaja.Udavasu he was the son and successor of Mithi Janaka.Nandivardhana was the son and successor of Udavasu.He is called pious by two Puranas and the Ramayana.Suketu was the son and successor of Nandivardhana and is called chivalrous and pious.

He was the son and successor of Suketu and is called pious and very strong and a royal sage.The ancient kings, who were called or said to have become Indras only held or usurped the position of High Priest of the tribe or realm, in addition to that of king e.g.the Devaraj and Dharmaraj of Bhutan, its High Priest and Chief Judge. The Epic-Puranic tradition knows of one Videha and one Ikshvaku king as Devaraja, and one Vasishtha with the same designation.One of the known achievements of Devaraja was his getting a bow from the gods who had received it from Shiva.This was the bow used by Siva after the destruction of the sacrifice of Daksha. It was a remarkable thing and continued in the family of the Janakas as a glorious heritage. It was in the time of Siradhvaja Janaka that it was broken by

Rama.Brihadratha, the Videhan king, was a contemporary of king Mandhatri of Ayodhya . One Janaka Daivarati of Mithila got instruction from Yajnavalkya. He was probably different from Brihaduktha, son, of Devarata.He is called Mahavirya by the Puranas. He is said to be valorous. One Janaka Daivarati is mentioned in the Mahabharata the management of whose father's sacrifice was taken by Yajnavalkya. He seems to have flourished after the Bharata War.

Dhrishtaketu is stated to be pious.,a defeater of foes and a royal sage.An ancient king named Dhrishtaketu is mentioned in the Mahabhrarata, but his territory is not given. Haryaswva is known to all our sources and is the first ruler of Videha whose name contains a synonym of horse.Suketu -a good banner and Brihadratha-a large charioteer.The Mahabharata states that Rama Jamadagnya defeated and killed many tribes, the Videhas being one of them. If this tradition has any basis in fact, it may mean that the king of Videha was defeated by Rama Jamadagnya. The Videhan king defeated might have been Haryasva or his predecessor Dhrishtaketa. The Mahahharatas refers to a battle between Janaka Maithila and Pratardana. In this battle the warriors of Mithila were victorious. The kingdom of Pratardana is not indicated here. But the Mahabharata mentions him at two other places as the king of Kasi.The Janaka Maithila who had an encounter with Pratardana might have been Pratindhaka. Maharoman is the first of the threee successive kings who bore names ending in roman. He is said to be learned.Svarnaroman is said to be pious and a royal sage. Hrasvaroman, the last of the three successive kings who bore names ending in roman is said to be a knower or piety and one possessing a great soul. He had two sons and Kusadhvaja.Siradhvaj to Sakuni was the expansionist phase of the Videhan kingdom. Sankasya was annexed and a branch line of Videha was established there which is said to have ruled for four generations. After Sumati, a contemporary of Stradhvaja Janaka, we do not hear of Vaisali, Videha's western neighbour the Vaisali state was absorbed by kingdom.Another feature is that with Siradhvaja begins an age in Videhan history in which the names of sovereigns are better preserved.

Siradhvaja is a famous king of Videha for several reasons. His adopted daughter, Sita, was married to Rama.

(continued)

14.A Moonless Summer Night Of My Village

-Jyoti Jha Chaudhary, London, U.K.

Lights of the thousands of stars
Don't seem enough for such a night
You miss the moon badly
Who can make the night bright.

Without proper transportation
Without supply of electricity.
Life here is so different
Deprived of city-like facility.

A moonless night of summer,
Is not a piece of cake
If you're going for a hike
Don't panic if you encounter a snake.

Among the sounds of toads and cockroaches
When one sound appears different

Do you need your Grand'ma to confirm you

This is the sound of a serpent.

My Village

Jyoti Jha Chaudhary, London, U.K.

Great is my pleasure

When come holidays

I with my family,

Along the home way,

Reach our native village

After travelling a day.

The Sun is same there

But different is its ray

Which, creates so lovely feelings

Making us happy always.

-सिद्धिरस्तु-